RNI:RJHIN/2013/53539

Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण

अध्यात्म की नई उड़ान...

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 06 हिन्दी (मासिक) 2018 सिरोही पृष्ठ 16 ब्रह्माकुमारीज़ की सामाजिक सेवाओं पर विशेष

07
08
10 जीवन प्रबंधन बी.के. शिवानी
11 रोजाना 12-15 हजार यूनिट बिजली उत्पादन

दो-शब्द

बी.के. निर्वैर
महासचिव
ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

वैश्विक ज्ञानोदय द्वारा 'स्वर्णिम युग'

सदियों से भारत देश ज्ञानोदय का केन्द्र है। क्योंकि यहां के आध्यात्मिक ज्ञान के उदय से पूरा विश्व आलोकित होता रहा है। आज विश्व में चारों ओर भौतिकवाद का बोलबाला है। वैश्विक चकाचौंध से सभी काफी प्रभावित हैं, लेकिन किसी के चेहरे पर निरंतर सुखद मुस्कान नजर नहीं आती है। बल्कि अल्पकाल के साधनों द्वारा मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप से कोसों दूर चला गया है और दुःख-अशांति, अत्याचार, हिंसा व रोग से बहुत दुःखी है। विश्व का कोई एक भी कोना बाकी नहीं बचा है जहां दुःख-अशांति की दृष्टि देखने को नजर न आए। इसका मूल कारण है अज्ञानता, भ्रम, भय। अब आवश्यकता है हर मनुष्यात्मा को ज्ञानोदय द्वारा पुनः जागृत करने की। जहां तक ज्ञानोदय का सवाल है तो आज भौतिक ज्ञान अपने चरम पर है उससे साधन सुविधा के सारे साजो समान जुटाए जा रहे हैं परन्तु सुख और शांति का अभाव लगातार बढ़ता जा रहा है। क्योंकि जिस सुख की कामना कर रहे हैं वह ईश्वरीय ज्ञान के उदय से ही होगा। इस ज्ञान के उदय के लिए स्वयं परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से समस्त विश्व को प्रदान कर रहे हैं। संस्थान ने प्रचार प्रसार तथा ज्ञान सूर्य का प्रकाश समस्त मनुष्यात्माओं तक पहुंचाने की योजना बनाई है। इसलिए 2018-19 वर्ष में सेवा का लक्ष्य 'वैश्विक ज्ञानोदय द्वारा स्वर्णिम युग' की स्थापना के लिए गांवों से लेकर शहरों तक की रूपरेखा तैयार की गई है। क्योंकि माता पिता और बच्चों के बीच श्रेष्ठ संस्कारों के होते अभाव ने चिंता की लकीरें खींच दी हैं। परमात्मा की इस विश्व व्यापी योजना में हम सब जुड़ें, इसे जीवन में धारण करें, तब जाकर हमारे देश-विदेश तथा समाज की रूपरेखा बदलेगी।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की वार्षिक बैठक में तय हुआ एजेंडा, 2018-19 में इस थीम पर होंगे कार्यक्रम...

वैश्विक ज्ञानोदय से 'स्वर्णिम युग'

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में उपस्थित वरिष्ठ भाई-बहनें एवं पदाधिकारी।

GLOBAL ENLIGHTENMENT FOR GOLDEN AGE
वैश्विक ज्ञानोदय द्वारा स्वर्णिम युग

बैठक में मंचासीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी जी, महासचिव भ्राता निर्वैर भाईजी, अतिरिक्त महासचिव भ्राता बृजमोहन भाईजी और बीके हंसा बहनजी।

शिव आमंत्रण » आबू रोड

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। एक ऐसा संगठन जिसका कर्म-धर्म और ध्येय विश्व को एक सूत्र में बांधकर हर एक नागरिक को सुखी, संपन्न, मूल्यनिष्ठ और खुशहाल बनाना है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि यहां आध्यात्मिक ज्ञान के साथ समाज उत्थान के लिए वर्षों से हर वो कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनका महत्व आज सरकार भी समझने लगी है। फिर चाहे नारी उत्थान की बात हो, नशामुक्ति के प्रयास, मूल्य शिक्षा से चारित्रिक विकास, बाल कल्याण, युवा कल्याण, पर्यावरण संरक्षण, निःशुल्क चिकित्सा और सशक्त किसान अभियान। ऐसे कई अनगिनत अभियानों, सम्मेलनों, सेमीनार और कॉन्फ्रेंस के माध्यम से संगठन समाज के हर वर्ग के लोगों को छूने के प्रयास में पिछले 82 वर्षों से कार्य कर रहा है।

गौरतलब है कि हाल ही में केंद्र सरकार ने ब्रह्माकुमारी संगठन के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा विकसित की गई शाश्वत यौगिक खेती पद्धति को समर्थन दिया है। साथ ही इसे अपनाने वाले किसानों को आर्थिक मदद मुहैया कराने का प्रस्ताव बनाया है। प्रभाग ने इस पद्धति को किसानों को कम आय में अधिक उत्पादन करने के उद्देश्य से वर्षों के शोध और मेहनत से विकसित किया है। वहीं केंद्रीय विद्यालय संगठन ने अपने शिक्षकों और स्टाफ को मूल्यनिष्ठ शिक्षा के लिए प्रशिक्षित करने की महती जिम्मेदारी भी संस्थान को सौंपी है। समाज के समुचित विकास और कल्याण के लिए संस्थान की ओर से हर वर्ष आगामी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई जाती है। इसी के तहत इस वर्ष भी 22 मार्च से 28 मार्च तक आबू रोड शांतिवन में संगठन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई। इसमें सभी 20 प्रभागों के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, नेशनल को-ऑर्डिनेटर, सदस्य सहित देश-विदेश से आए 1800 से अधिक बालब्रह्मचारी भाई-बहनों ने भाग लिया। बैठक में मुख्य रूप से ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव बीके निर्वैर भाई, मुख्य प्रशासिका 103 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी की गरिमामयी उपस्थिति रही। इसमें सर्व सहमति से निर्णय लिया गया कि इस वर्ष संस्थान की ओर से 'वैश्विक ज्ञानोदय द्वारा स्वर्णिम युग' थीम पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

वहीं शांतिवन में आगामी सितंबर में ग्लोबल समिट कम एक्सपो आयोजित की जाएगी, जिसमें विशेषज्ञ पर्यावरण, साइंस और स्प्रीचुअलिटी पर मंथन करेंगे। इस विशाल एक्सपो में देश-विदेश से जानी-मानी हस्तियां और वैज्ञानिकों को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाएगा।

सशक्त भारत से 'स्वर्णिम युग' की ओर

विषय पर इस साल चलाए जाएंगे ये कार्यक्रम...

- 'हेल्दी, वेल्दी, हैप्पी राजस्थान' अभियान पूरे राजस्थान प्रदेश में चलाया जाएगा।
- महिला प्रभाग द्वारा 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान पूरे देशभर में चलाया जाएगा।
- युवाओं को आध्यात्म से जोड़ने के लिए युवा प्रभाग द्वारा युवा जागृति से 'स्वर्णिम भारत' अभियान
- शिक्षा प्रभाग पर्यावरण संरक्षण की दिशा में हरा-भरा, स्वच्छ और स्वस्थ भारत अभियान चलाएगा।
- 'जीवन प्रबंधन दक्षता विकास' अभियान चलाएंगे।
- मेडिकल प्रभाग द्वारा लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने 'मेरा भारत, स्वस्थ भारत' अभियान
- ग्राम विकास प्रभाग द्वारा 'पारंपरिक यौगिक खेती एवं किसान सशक्तिकरण' अभियान
- वैज्ञानिक एवं अभियंता प्रभाग द्वारा 'जल, ऊर्जा संरक्षण तथा प्रदूषण मुक्त भारत' अभियान
- यातायात प्रभाग द्वारा दुर्घटनाएं रोकने के लिए 'सुरक्षित यातायात- सशक्त भारत' अभियान
- मेडिकल प्रभाग द्वारा 'बाल स्वास्थ्य एवं कुपोषण मुक्त भारत' अभियान चलाया जाएगा।

ब्रह्माकुमारीज़ ने शुरू की जेलों में बदलाव की पहल, विचार बदले तो बदल गई जिंदगी

'जेल' से जन्नत की ओर...

ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा पिछले कई वर्षों से देशभर की जेलों में आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा दी जा रही है। इससे देश के कई जेलों में बहुत ही सकारात्मक बदलाव देखने को मिले हैं। कैदियों का जहां सोचने का नजरिया बदला है वहीं उनमें नए सिरे से जिंदगी जीने का हौसला मिला है। कई का जीवन राजयोग मेडिटेशन से सुखमय और शांतिमय जीवन जी रहे हैं। साथ ही उनके व्यवहार में भी बदलाव आया है। इस कॉलम में हम आपको बताएंगे जेल में बदलाव की एक नई कहानी....

शिव आमंत्रण ➤ सागर

- ब्रह्माकुमारी संस्थान की पहल से देशभर के कई जेलों में राजयोग मेडिटेशन के प्रशिक्षण से बदली तस्वीर
- आध्यात्मिक ज्ञान से जेलों में सजा काट रहे कैदियों के आचरण में आया सुधार
- इस बार के अंक में जानिए आध्यात्मिक ज्ञान से कैसे बदली सागर जेल की तस्वीर

विचार बदले तो बदल गया सोचने का नजरिया

अध्यात्म अर्थात् आत्मा का अध्ययन, स्वयं का अध्ययन। जब व्यक्ति आध्यात्मिक हो जाता है तो स्वयं के अध्ययन से उसे अपने जीवन में व्याप्त बुराईयों और बुरे संस्कारों का ज्ञान होने लगता है और यहीं से शुरू होती है बदलाव की शुरुआत। अपने बुरे और आसुरी संस्कारों के वश अपराध के कारण जेलों में बंद कैदियों, बंदियों को जब आध्यात्मिक ज्ञान दिया गया तो उनकी भी आत्मा की ज्योति जाग उठी। उन्हें अपने किए का पश्चाताप हुआ और वह अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की ओर दिनरात लगे हुए हैं। मप्र की सागर केंद्रीय जेल में बंद कई कैदियों का जीवन ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा दिए जा रहे राजयोग मेडिटेशन के प्रशिक्षण से बदल गया है। जो कैदी पहले जेल में निराशा भाव लिए और तनाव में रहते थे वह आज खुश और प्रसन्न रहते हैं। जब उन्हें सोचने का सही ढंग और श्रेष्ठ विचारों का महत्व बताया गया तो उनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल गया। इससे कैदियों में आपसी भाईचारा, सहयोग की भावना और अपनेपन की भावना का भी विकास हुआ है। कैदियों को जब कर्मफल का और गीता ज्ञान के साथ आत्मा-परमात्मा का ज्ञान दिया गया तो उनमें अपराधबोध कम हुआ है। इससे वह पश्चाताप से बाहर निकले हैं और वर्तमान को खुशी-खुशी गुजार रहे हैं। तो आइए जानते हैं सागर की केंद्रीय जेल के बारे में, कैसे यहां कैदियों का आचरण बदला....

सागर की सेंट्रल जेल में राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करते कैदी भाई।

"जब से जेल के अंदर ब्रह्माकुमारी संस्थान की बहनों द्वारा राजयोग मेडिटेशन केंद्र शुरू किया गया है और इसका प्रशिक्षण पुरुष/महिला कैदियों को दिया गया तो इससे कई कैदियों को आचरण-व्यवहार में बदलाव आया है। कई कैदी सुबह से ध्यान लगाते हैं। इससे उनमें आध्यात्मिकता के प्रति रुचि बढ़ी है और एक सकारात्मक माहौल बना है।

राकेश भांगरे
जेल अधीक्षक, केंद्रीय जेल, सागर

"वर्ष 2014 से केंद्रीय जेल में अधिकारियों के सहयोग से राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण कैदी/बंदियों को देना शुरू किया गया था। जब कैदी भाई-बहनों को कर्म सिद्धांत की बातें और जीवन में विचारों के महत्व को गहराई से बताया तो उनमें कुछ ही दिनों में बदलाव आना शुरू हो गया। साथ ही उनका आचरण और व्यवहार भी बदल गया है। इससे जेल में सकारात्मक माहौल का वातावरण हो गया है।

बीके छाया
संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र, सागर

जेल में मिली, जीने की राह

"पहले मेरे शरीर में काफी दर्द रहता था। जेल में एक-एक दिन मुश्किल से गुजरता था। साथ ही घर की चिंता सताती रहती थी। जब से राजयोग मेडिटेशन का नियमित अभ्यास शुरू किया है तब से शरीर के पूरा दर्द खत्म हो गया है। कर्म फल का ज्ञान होने से अब तनाव खत्म हो गया है और जीवन आनंदमय बन गया है। योग के माध्यम से घर में बेटे को भी शुभ संकल्प दिए, जिससे उसका आचरण भी सुधर गया है और वह घर की जिम्मेदारी बखूबी निभाने लगा है।

अंगद पिता बाबूसिंह
कैदी, केंद्रीय जेल, सागर

मैंने गुस्से पर काबू पा लिया

"जेल में पहले मुझे बहुत गुस्सा आता था। कई बार तो आत्महत्या करने तक का मन करता था। जीवन से आस खत्म हो गई थी, लेकिन जब से ब्रह्माकुमारी दीदी ने आध्यात्मिक ज्ञान सुनाया और राजयोग मेडिटेशन करना सिखाया तो मेरा पूरा जीवन ही बदल गया। आज मैं बहुत खुश रहती हूं और मन में सदा सकारात्मक और सभी के कल्याण के विचार ही आते हैं। मैंने मेडिटेशन के प्रयोग अपने शरीर पर किया और पहले मुझे जो डायबिटीज थी वह अब नार्मल हो गई है। रोज सुबह 4 बजे ब्रह्ममुहूर्त में राजयोग मेडिटेशन करती हूं। जेल से मुझे जीने की नई राह मिल गई।

अंजू चौकसे
कैदी, केंद्रीय जेल, सागर

सागर (मप्र) की केंद्रीय जेल...

आध्यात्मिक ज्ञान से जेल के माहौल में आया सकारात्मक बदलाव, कैदियों में बढ़ा भ्रातत्व भाव

2014	70-80	25-30	03
से जेल में राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण शुरू	कैदी रोजाना करते हैं राजयोग मेडिटेशन, सत्संग	महिला कैदियों की दिनचर्या में शामिल राजयोग	साल से जेल में बह रही ज्ञान व ध्यान की गंगा

कई कैदी सुबह 4 बजे से ब्रह्ममुहूर्त में लगाते हैं ध्यान

कैदियों को दिया कर्मफल का ज्ञान

कैदी/बंदियों को जब आध्यात्मिक ज्ञान से यह समझ आई कि हमारे हर-अच्छे बुरे कर्म का फल हमें ही भोगना पड़ता है। इस जन्म में या फिर अगले जन्म में तो उन्होंने स्वयं में व्याप्त बुराइयों और बुरे संस्कारों को लेकर मंथन शुरू किया और यहीं से सकारात्मक बदलाव की शुरुआत हुई। कुछ कैदियों से शुरू हुआ ये कारवां आज सैकड़ा तक पहुंच गया है। इससे दूसरे कैदी भी शिक्षा लेकर राजयोग मेडिटेशन सीखते जा रहे हैं।

सकारात्मक चिंतन का बताया महत्व

जेल शिक्षिका गीता रायकवार ने बताया कि जब कैदी/बंदियों को यह ज्ञान दिया गया कि यह मानव जीवन अनमोल है। जो हमसे जाने-अनजाने में अपराध हुआ है अब उसे बदला नहीं जा सकता है, लेकिन भविष्य में श्रेष्ठ कर्म करने, लोगों का भला करने, अच्छे गुण अपनाकर जीवन को सफल बनाया जा सकता है। जेल को ही आत्म उन्नति का केंद्र बना सकते हैं। वर्तमान को अच्छा किया तो भविष्य भी अच्छा बन जाता है। व्यर्थ के तनाव, चिंता से सिर्फ हमारा ही नुकसान होता है। इसकी जगह मन में अच्छे विचारों का ही चिंतन करें। कुछ तो अपना जीवन बदलकर दूसरों को भी सकारात्मक चिंतन का महत्व बताने लगे हैं।

जेल में रोज लगती है ज्ञान-ध्यान की क्लास

जेल के अंदर रोज सुबह आध्यात्मिक सत्संग होता है। इसमें जेल शिक्षिका कैदियों को ईश्वरीय महावाक्य पढ़कर सुनाती हैं, जिसमें रोज ज्ञान की अच्छी-अच्छी बातें होती हैं। साथ ही उन्हें रोज किसी एक विषय पर होमवर्क में चिंतन करने के लिए दिया जाता है। जेल में कुछ कैदी सुबह 4 बजे से ही ध्यान लगाते हैं। साथ ही शाम को भी ईश्वरीय ध्यान करते हैं। जेल में कैदियों की अध्यात्म के प्रति रुचि देख अधिकारियों ने संतुष्टता व्यक्त की।

जेल के अंदर महिला कैदी राजयोग राजयोग मेडिटेशन करते हुए।

अभावग्रस्त बच्चों को जीने की नई राह दिखाता.... अखिल भारतीय दिव्य नगरी प्रोजेक्ट

स्लम बस्तियों की बदलती 'तस्वीर'

07 स्लम बस्तियों में प्रोजेक्ट जारी

4250 परिवारों को मिला लाभ

17500 जनसंख्या सभी बस्तियों की

646 विद्यार्थियों का बदला जीवन

100 महिलाओं को सिलाई सिखाकर बनाया आत्मनिर्भर

60 बुजुर्ग महिला/पुरुष ककहरा सीखे

120 भाई/बहनें इस सेवा में लगे

05 नए स्थानों में 2018 में शुरुआत

अहमदाबाद के नवरंगपुरा स्लम बस्ती भगत की चाली में शुरू हुआ प्रोजेक्ट अब तक देश के सात शहरों में पहुंच चुका है, वर्ष 2018 में महाराष्ट्र के जयसिंगपुर, आगरा ईदगाह, अजमेर में नवाब का बाड़ा, मप्र रीवा में इसे शुरू किया है

शिव आमंत्रण ❯ अहमदाबाद/ आबू रोड

जब हमारी आंतरिक व्यवस्था सही और सुदृढ़ होगी तो बाहरी व्यवस्था अपने आप बदलने लगती है। गरीब और मलीन बस्ती के लोगों के जीवन में इसी आंतरिक बदलाव से खुशनुमा जीवन की ओर अग्रसर करने, सम्मानपूर्वक जीने के लक्ष्य को लेकर दिव्य नगरी स्लम प्रोजेक्ट की नींव रखी गई। इसका मकसद है बच्चों को मुख्य धारा से जोड़कर उन्हें शिक्षित कर सभ्य नागरिक बनाना, बेरोजगार युवाओं को रोजगार दिलाना।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा तीन वर्ष पूर्व शुरू किया गया ये दिव्य प्रोजेक्ट आज भारत के 7 शहरों में कुशलतापूर्वक चल रहा है। जिन स्थानों पर ये प्रोजेक्ट चल रहा है वहां लोगों की जीवनशैली बदली है। इसकी सराहना स्थानीय प्रशासन और जनप्रतिनिधि भी कर रहे हैं। ब्रह्माकुमार भाई-बहनों की अथक मेहनत, लगन और सेवाभाव के चलते बहुत ही कम समय में इसके अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। बच्चों के रहन-सहन में जहां बदलाव आया, वहीं शैक्षणिक स्तर भी बढ़ा। युवाओं और महिलाओं को रोजगार से जोड़ा जा रहा है। **दिव्य नगरी स्लम सेवा प्रोजेक्ट के बारे में एक रिपोर्ट....**

"**पहले** मेरी बस्ती के बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। यहां-वहां घूमते और कचरा डालते थे, इससे लोग बच्चों की शिकायत करते थे। दिव्य नगरी प्रोजेक्ट की बदौलत आज जहां बस्ती के सभी बच्चे स्कूल जाते हैं, वहीं इनके जीवन को एक नई दिशा मिली है। सभी बच्चे साफ-सफाई के साथ अच्छे से पढ़ने लगे हैं। पूरी बस्ती का माहौल सकारात्मक हो गया है। लोगों में जागरुकता आ रही है।

भीखी बहन
भगत की चाली, नवरंगपुरा, अहमदाबाद

"**ब्रह्माकुमारी** बहनों की अथक मेहनत से इन बच्चों का भविष्य सुधर गया। आज इन्हें जीने की नई दिशा मिल गई। आगे बढ़ने की लिए धन की नहीं अच्छे विचारों की जरूरत होती है, ये बात संस्थान ने साबित कर दिखाई है।

डी. थारा
आईएएस, यूनिसिपल कॉर्पोरेशन, अहमदाबाद

अहमदाबाद नवरंगपुरा क्षेत्र की स्लम बस्ती भगत की चाली के बच्चे नशा-गुटखा छोड़ अब भविष्य के सपने बुनने लगे हैं।

स्लम प्रोजेक्ट के तहत संचालित गतिविधियां

- गर्मी में बच्चों के लिए बाल व्यक्तित्व विकास शिविर लगाए जाते हैं।
- महीने में एक बार मेडिकल कैंप में बच्चों का संपूर्ण स्वास्थ्य परीक्षण।
- जो युवा या बच्चे नशा करते हैं उनके लिए विशेष काउंसलिंग कर नशा छुड़वाया जा रहा है।
- बस्ती में स्वच्छता अभियान और रैली से लोगों को जागरूक किया जाता है।
- बच्चों को चित्रकला, ड्राइंग, मेंहदी, नुक्कड़ नाटक, भाषण करना, रंगोली और मूल्यनिष्ठ शिक्षा देकर प्रतिभा निखारने के साथ सभ्य नागरिक बनाया जा रहा है।
- गोद ली हुई बस्ती में महिलाओं को निःशुल्क सिलाई, कढ़ाई का प्रशिक्षण दे रहे हैं।
- लोगों की समस्याओं को जानकर सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाया जा रहा है।
- पहली से आठवीं तक के बच्चों को आरटीई के तहत एडमिशन करवाए जाते हैं।
- लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- पहली से आठवीं तक के बच्चों को रोजाना एक घंटे क्लास लेकर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास, गणित-विज्ञान और अंग्रेजी सिखाई जाती है।
- बच्चों सहित माता-पिता को घर में साफ-सफाई से रहने, बोलचाल में अच्छी भाषा बोलने के लिए काउंसलिंग की जाती है।
- बच्चों को बैग, कॉपी-किताबें, ड्रेस वितरण के साथ शैक्षणिक यात्रा कराई जाती है।
- युवाओं को प्रशिक्षण देकर निजी कंपनियों में रोजगार उपलब्ध भी कराया जाता है।
- बच्चों को विभिन्न एक्टीविटीज के माध्यम से मूल्य शिक्षा दी जाती है।

प्रोजेक्ट का उद्देश्य...

देशभर में स्लम बस्तियों में रहने वाले लोग जो समाज में पिछड़े हुए हैं जो प्यार और सम्मान से अछूते हैं। संस्कार, संस्कृति, शिक्षा-दीक्षा से वंचित हैं, उन्हें आध्यात्मिक गुण एवं शक्तियों से धनी बनाना है। ऐसी आत्माओं को परमात्म प्यार, पालना, गुणों एवं ज्ञान से साहूकार बनाना। गरीबी निवारण के लिए आध्यात्मिकता एक सशक्त उपाय है, उसका उदाहरण प्रस्तुत करना। राजयोग के माध्यम से मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करना है। साथ ही सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाकर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना, आत्म सम्मान के साथ जीना सिखाना और इन बस्तियों में छिपी प्रतिभाओं को उभारकर उन्हें एक मंच प्रदान करना ही इस भावी प्रोजेक्ट का उद्देश्य है।

यहां मैं प्रेरणा लेने आया हूं

"**बहुत** सुख-सुविधाएं देने से पुस्तकीय ज्ञान जरूर मिल जाता है, परन्तु अच्छे संस्कार नहीं मिलते। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा बच्चों को श्रेष्ठ संस्कार दिए जा रहे हैं। मैं यहां प्रेरणा देने नहीं, प्रेरणा लेने आया हूं। ईश्वरीय प्रेम के बिना निःस्वार्थ रूप से सेवा करना संभव नहीं है। स्लम को श्रेष्ठ बनाने की सेवाएं जो ब्रह्माकुमारी संस्था कर रही है वह उदाहरणमूर्त है। मैं जहां भी जाऊंगा, यहां का उदाहरण जरूर दूंगा। आपके प्रयास बधाई के पात्र हैं।"

भूपेन्द्रसिंह चुडासमा
शिक्षा मंत्री, गुजरात

बीके सीए ललित
चीफ प्रमोटर
दिव्य नगरी स्लम सेवा प्रोजेक्ट, माउंट आबू

असमानताएं मिटाने का एक प्रयास

विविधताओं से भरे संसार में असमानताएं मिटाने और वंचितों को मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास है। सभी असमानताओं में एक मौलिक समानता विद्यमान है, हम सब चैतन्य आत्माएं एक परमात्मा पिता की संतान हैं। सकारात्मक परिवर्तन का एक संकल्प कई दिशाएं खोल देता है। दिव्य नगरी उसका उदाहरण है।

बीके ईशिता
संचालिका
नवरंगपुरा सेवाकेंद्र व चीफ एक्जीक्यूटिव, दिव्य नगरी स्लम सेवा प्रोजेक्ट, अहमदाबाद

इस सेवा से जीवन में संतोष मिलता है

इस सेवा से संतोष मिलता है कि यह जीवन किसी का जीवन बनाने, संवारने के काम आया। इस सेवा से मुझे संयुक्त राष्ट्र, न्यूयार्क, यूएसए तक पहुंचाया और विशेष प्रकार की सेवा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित करने का मौका दिया। 'भगत की चाली' स्लम के बच्चों में परितर्वन देख खुशी होती है।

बीके रूपा
केशोद, गुजरात,
दिव्य नगरी स्लम सेवा प्रोजेक्ट की स्थानीय संयोजिका

बच्चों में आया सकारात्मक परिवर्तन

प्रोजेक्ट के तहत अहमदाबाद के प्राथमिक स्कूल में 11 अगस्त 2016 से सेवा शुरू की गई। यहां स्कूल में पहले दिन से ही कक्षा 6वीं से आठवीं तक के 250 बच्चों को सुबह सामूहिक प्रार्थना में मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। प्रतिदिन आध्यात्मिक ज्ञान सुनाया जाता है। इसका असर ये हुआ कि पहले जहां ये बच्चे स्कूल बिना नहाए आते थे अब वह नहाकर और साफ-सुथरे कपड़े पहनकर स्कूल आने लगे हैं। जो भी गलतियां करते हैं वह सच्चाई से बताते हैं। प्रोजेक्ट की शुरुआत में 33 बच्चे तंबाकू-गुटखा खाते थे, इनमें से 18 बच्चों ने पूरी तरह से तंबाकू छोड़ दी है। बाकी के बच्चे भी छोड़ना चाह रहे हैं। बच्चों को मेडिकल कैंप से परीक्षण किया गया। बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आया, वे व्यसन मुक्त बने और स्वच्छ व संस्कारी रहने लगे हैं। यह देखकर उनके माता-पिता में भी परिवर्तन आने लगा है। स्कूल का माहौल सकारात्मक हो गया है। इस परिवर्तन से हम कह सकते हैं कि ये बच्चे भविष्य में समाज का भी कल्याण करेंगे।

यहां चल रहे प्रोजेक्ट

- अहमदाबाद के भगत की चाली बस्ती
- गुजरात के स्लम एरिया कड़ी में
- गुजरात के ही केशोद में
- गुजरात के पाटन में
- झारखंड के जमशेदपुर में
- बिहार के बारसोई में
- उड़ीसा के भुवनेश्वर में

बच्चों में आए परितर्वन

- बच्चे साफ-सुथरे कपड़े पहनकर और नहाकर स्कूल जाने लगे
- पढ़ाई के प्रति रुचि बढ़ गई है।
- बच्चों के साथ माता-पिता की सोच में भी आश्चर्यजनक सकारात्मक परिवर्तन आया, आगे बढ़ने की चाह बढ़ी है।

किसानों की उन्नति और खुशहाली के नए आयाम गढ़ता
कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग

1996 कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की स्थापना
800 से अधिक किसान भाई कर रहे खेती
2007 से यौगिक खेती के प्रोजेक्ट पर काम शुरू
16 सूत्रीय एजेंडा गांवों के संपूर्ण विकास के लिए

ब्रह्माकुमारी संस्थान के 20 प्रभागों में से एक कृषि ग्राम विकास प्रभाग किसानों की तरक्की, आर्थिक संपन्नता, उन्नति और खुशहाली को लेकर रोज नित नए आयाम गढ़ रहा है। कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की स्थापना वर्ष 1996 में की गई थी। प्रभाग द्वारा वर्ष 2007 से यौगिक खेती प्रोजेक्ट शुरू किया गया, जिसका प्रशिक्षण लेकर आज 800 से अधिक किसान सफलतापूर्वक यौगिक खेती कर रहे हैं और कम लागत में डेढ़ गुना उत्पादन ले रहे हैं।

यही नहीं भारत सरकार ने यौगिक खेती के महत्व को देखते हुए और इसे प्रोत्साहन देने के लिए सरकारी अनुदान देने का प्रस्ताव बनाया है। इसके तहत यौगिक खेती करने वाले किसानों को प्रति हेक्टेयर 48700 रुपए अनुदान के रूप में तीन वर्ष में दिए जाएंगे।

इस वर्ष प्रभाग की सेवाएं...
राजस्थान किसान सशक्तिकरण अभियान

12 स्थानों से चलाया गया अभियान
20 दिन प्रदेशभर में किया भ्रमण
26 जिले के 1094 गांवों में पहुंचा
137612 किसान लाभान्वित
3812 ने किया व्यसनों का त्याग

बिहार किसान सशक्तिकरण अभियान

10 स्थानों से चलाया गया अभियान
20 दिन प्रदेशभर में किया भ्रमण
29 जिलों में चलाया गया अभियान
1368 गांवों में पहुंचा अभियान
240861 किसान लाभान्वित
4520 किसानों ने किया व्यसनों का त्याग

किसानों के आएंगे अच्छे दिन

राधामोहन सिंह
केंद्रीय कृषि मंत्री
भारत सरकार

जैविक-यौगिक खेती से फसलों की उत्पादकता बढ़ेगी। इससे किसानों की आय बढ़ेगी और देश की आर्थिक व्यवस्था मजबूत होगी। वर्ष 2022 तक खेती को फायदे का सौदा बनाने का लक्ष्य है। सकारात्मक सोच का प्रकृति के साथ-साथ पशुधन विकास पर बहुत असर पड़ता है। हालांकि, कुछ लोगों को इस पर यकीन नहीं आता, लेकिन यह वैज्ञानिक सत्य है। सरकार ने यौगिक खेती के विकास को समर्थन देने का प्रस्ताव बनाया है, ताकि किसानों का खेती के पारंपरिक तरीकों की ओर रुझान बढ़े।

यौगिक खेती, सशक्त किसान

बी.के. सरला बहन
अध्यक्षा
कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग

प्रभाग द्वारा समग्र भारत में किसान सशक्तिकरण अभियान निकालकर, शाश्वत यौगिक खेती के कार्यक्रमों से किसानों को सशक्त किया जा रहा है। अभी तक सरकार के सहयोग से पूरे उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, बिहार, राजस्थान में यह अभियान निकाले जा चुके हैं। इस वर्ष झारखंड, मध्य प्रदेश में निकालने का तय किया है। इसके अंतर्गत कई कृषि विश्व विद्यालय और कृषि अधिकारी संपर्क में आए हैं। इस वर्ष प्रभाग का लक्ष्य है भारत के अलग-अगल स्थानों पर किसानों को एकत्रित करके 82 किसान सम्मेलन किए जाएं, जिसकी सूची तैयार हो चुकी है।

सरकार का समर्थन गौरव की बात

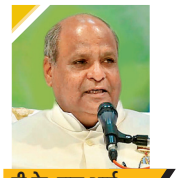

बी.के. राजू भाई
उपाध्यक्ष
कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग

दिल्ली पूसा में आयोजित राष्ट्रीय कृषि मेले में शाश्वत यौगिक खेती के स्टाल का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अवलोकन किया। साथ ही कृषि मंत्री, वैज्ञानिक आदि को यौगिक खेती की जानकारी दी गई। इसी का परिणाम रहा कि भारत सरकार ने यौगिक खेती को समर्थन दिया और अनुदान देने का प्रस्ताव बनाया है। ये हमारे संस्थान और प्रभाग के लिए गौरव की बात है। इस वर्ष मध्य प्रदेश और झारखंड के किसानों को शाश्वत यौगिक खेती और नशामुक्ति का संदेश देकर जागरूक किया जाएगा।

योग के प्रयोग दस साल में 12 लाख रुपए नशे में उड़ाए, हार्ट, एक्जीमा, खांसी से जीना हुआ दुश्वार, दस कदम में फूलने लगी थी सांसें, आज जी रहे स्वस्थ जिंदगी

राजयोग मेडिटेशन से करनाल के किसान को मिली नई जिंदगी...

नशा छूटा तो आर्थिक संपन्नता बढ़ी, यौगिक खेती से जिले में बनाई नई पहचान, जीरो बजट में कमा रहे अच्छा-खासा मुनाफा

शिव आमंत्रण ➤ करनाल (हरियाणा)

कहते हैं नजारा बदलिए, नजरिया बदल जाएगा। क्योंकि आज हम जो हैं, जैसे हैं और कल जो होंगे उसमें सबसे बड़ा योगदान हमारे विचारों और भावनाओं का होता है। विचार किसी को महान तो किसी को शैतान बना देते हैं। हरियाणा जिला करनाल ग्राम गगसीना के किसान ज्ञानसिंह संधू (54) की जिंदगी नशे की लत में उलझकर बोझ बन गई थी। मांस-शराब, जुआ-सट्टा, अफीस, बीड़ी-सिगरेट के नशे को ही जिंदगी का मकसद बना लिया था। हार्ट में ब्लॉकेज के साथ एक्जीमा, खासी-बलगम की बीमारी ने घेर लिया था। शरीर इतना कमजोर हो गया था कि दस कदम चलने में ही सांस फूलने लगी। लेकिन राजयोग मेडिटेशन के प्रयोग से नशा छूटने के साथ हार्ट के पांचों ब्लॉकेज सामान्य हो गए। एक्जीमा, खांसी-बलगम की समस्या भी दूर हो गई।

आज ज्ञानसिंह का जीवन दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। वहीं यौगिक खेती में जीरो बजट में अच्छा मुनाफा होने से कृषि वैज्ञानिक भी अचंभित हैं। अपने विचारों को बदलने से ज्ञानसिंह की पूरी जिंदगी खुशहाल और सुखमय बन गई।

विशेष बातचीत में ज्ञानसिंह ने बताया कि मैं जब दस साल का था तभी से बीड़ी-सिगरेट की लत लग गई थी। जब बड़ा हुआ तो धीरे-धीरे अफीम का नशा करने लगा और जुआ भी खेलने लगा। वर्ष 1993 से तो नशे में ही रोजाना 200 रुपए खर्च होने लगे। वहीं वर्ष 2000 में स्थिति ये हो गई कि मांस-शराब, अफीम और जुआ में ही रोजाना 500 रुपए से अधिक खर्च होने लगे। पूरा परिवार इस नशे के चलते दुखों से घिर गया। सभी त्रस्त हो गए। लेकिन वर्ष 2004 में जब ब्रह्माकुमारी संगठन के संपर्क में आया तो पता चला कि ये जीवन कितना अनमोल है जिसे मैं बुराइयों में बर्बाद कर रहा हूं। यहीं से परिवर्तन की शुरुआत हुई। मात्र तीन माह के अंदर मैंने राजयोग मेडिटेशन का अपने जीवन में कई प्रयोग किए। इससे जहां हार्ट के पांचों ब्लॉकेज खुल गए, वहीं नशे की लत चंद दिनों में छूट गई। आज मेरा जीवन खुशहाल हो गया है।

नशे में ऐसे बर्बाद किए रुपए...	चार साल में 7 लाख से अधिक किए खर्च
वर्ष 1993 में नशे में 200 रुपए रोजाना खर्च	वर्ष 2000 से 500 रुपए रोजाना खर्च
01 महीने में 6 हजार रुपए खर्च	01 महीने में 15 हजार रुपए खर्च
01 साल में 72,000 रुपए खर्च	01 साल में 1,80,000 रुपए खर्च
06 साल में 4,32,000 रुपए खर्च	04 साल में 7,20,000 रुपए खर्च

2008 से शुरू की यौगिक खेती: राजयोगी किसान ज्ञानसिंह ने बताया कि राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से अपने शरीर को स्वस्थ करने के बाद मैंने इसका प्रयोग खेती में करने की ठानी। पहले दो एकड़ गेहूं की फसल पर योग का प्रयोग किया। इसमें सिर्फ जैविक खाद ही डाला। पहले साल उत्पादन थोड़ा कम रहा और जो कमी रह गई उसे पूरी कर तीसरे साल फिर दो एकड़ जमीन पर गेहूं की सी-306 किस्म लगाई। इसमें सिर्फ जीवामृत व जैविक खाद डाला। ये जीरो बजट खेती रही। यौगिक खेती से एक एकड़ में 15 क्विंटल गेहूं निकला और रासायनिक खेती से 14 क्विंटल गेहूं निकला। रासायनिक खेती में पांच हजार रुपए का खर्च आया।

खेती को देते थे योग से शुभ संकल्प: ज्ञानसिंह ने बताया कि वह अपने खेत में सुबह 4 बजे और शाम को 6.30 बजे से 7.30 बजे तक राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से फसल को शुभ संकल्प देते थे। योग में ये अनुभव करते थे कि परमात्मा से शक्तिशाली किरणें आ रहीं हैं और वह खेत पर पड़ी रहीं हैं। इससे फसल की अच्छी वृद्धि हो रही है। वह दाना पौष्टिक हो रहा है। इस तरह योग का रोजाना प्रयोग किया। इस साल भी यौगिक खेती से दो एकड़ खेत में 34 क्विंटल गेहूं का उत्पादन हुआ है। वहीं 35 क्विंटल बासमती चावल भी निकला है।

10 कदम चलने में ही फूलने लगी थी सांसें: पहले रात 1 बजे तक सोते थे और सुबह 11 बजे तक उठते थे। नशे के चलते शरीर इतना कमजोर और निढाल हो गया था कि मात्र दस कदम चलने में ही सांसें फूलने लगती थीं। एसीडिटी से जीना दुश्वार हो गया था। पैर में एक्जीमा भी हो गया था। दिन-रात खांसी चलती रहती थी और बलगम की समस्या भी हो गई थी। श्वास भी चलने लगी थी। डॉक्टर ने कहा था कि कुछ दिन और नशा नहीं छोड़ा तो जिंदगी से हाथ धोना पड़ सकता है। तीन महीने के राजयोग मेडिटेशन से ये सभी समस्याएं दूर हो गईं। अब तो दिनचर्या सुबह 4 बजे से ही शुरू हो जाती है। ज्ञानसिंह के जीवन में हुए परिवर्तन को देखकर पूरे गांव के लोग एक बार माउंट आबू पहुंचे और बोले ये परिवर्तन सिर्फ परमात्म शक्ति से ही संभव है। नशा छोड़ने के बाद पैसे का जहां दुरुपयोग बच गया, वहीं आर्थिक संपन्नता भी बढ़ गई।

शिक्षा प्रभाग पर
एक नजर...

- देशभर में 9 भाषा में 15 वैल्यू एजुकेशन के कोर्स संचालित
- देशभर के सभी इंजीनियरिंग कॉलेज के साथ ऑनलाइन कोर्स शुरू करने के लिए एमओयू हुआ।
- मणिपाल विश्व विद्यालय में एक रिसर्च प्रोजेक्ट चल रहा है, जिसमें राजयोग के माध्यम से अध्ययन कर रहे हैं कि इसका माइग्रेन पर क्या असर पड़ता है।
- सितंबर-2017 में हायर सेकंडरी स्कूल के शिक्षकों के लिए आबू रोड शांतिवन में ‘खुशी और शांतिपूर्ण जीवन के लिए आध्यात्मिक शिक्षा’ विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें देशभर से 5 हजार शिक्षाविद् जुटे और सभी ने चार दिन तक मंथन किया।
- जनवरी-2017 में मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता के विभिन्न पाठ्यक्रमों में 2017 में उत्तीर्ण विद्यार्थियों का भव्य दीक्षांत समारोह आबू रोड शांतिवन में आयोजित किया गया।

इन यूनिवर्सिटी में
चल रहे कोर्स...

- अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, तमिलनाडु
- कोटा यूनिवर्सिटी
- वायसीएमओ यूनिवर्सिटी, महाराष्ट्र
- आरकेडीएफ (रामकृष्णा धर्मार्थ फाउंडेशन) यूनिवर्सिटी, भोपाल
- डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी, आसाम
- यूनिवर्सिटी ऑफ द बेस्ट इनडीईएस, त्रिनिदाद
- एसआरएनएम कॉलेज, सत्तूर, तमिलनाडु
- कर्नाटका स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, मैसूर
- गनपत यूनिवर्सिटी, गुजरात
- डाऊन-टाऊन यूनिवर्सिटी, आसाम
- तमिलनाडु टीचर्स एजुकेशन यूनिवर्सिटी, चेन्नई
- थियागजर कॉलेज, मदुरई, तमिलनाडु

समाज में मूल्य शिक्षा के लिए समर्पित
एजुकेशन विंग...

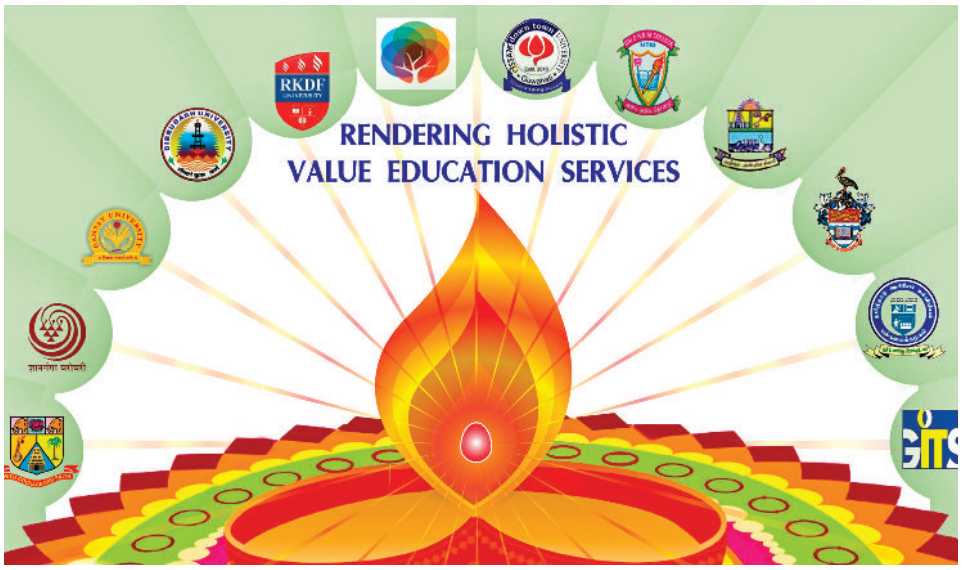

शिव आमंत्रण ➤ आबू रोड।

ब्रह्माकुमारी संस्थान के विभिन्न 20 प्रभागों में से एक शिक्षा प्रभाग समाज में मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता की अलख जगा रहा है। चरित्रवान एवं मूल्यनिष्ठ नई पीढ़ी ही उज्जवल भविष्य का आधार है। इसी संकल्प के साथ शिक्षा प्रभाग की स्थापना की गई। प्रभाग का लक्ष्य है कि स्कूल एवं कॉलेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थी मूल्यनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ एवं संस्कारित हों। उनमें आध्यात्मिकता का विकास हो, ताकि वह तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश में अपने आंतरिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ सकें।

इसके लिए प्रभाग द्वारा संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू में दो बार शिक्षाविदों का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जाता है। साथ ही संस्थान के देशभर में संचालित सेवाकेंद्रों के माध्यम से स्कूल-कॉलेजों में जाकर विद्यार्थी को मूल्य शिक्षा के लिए सम्मेलन, सेमीनार और वर्कशॉप आयोजित किए जाते हैं। साथ ही राष्ट्रीय अभियान, रैली, सभा संगोष्ठी के माध्यम से नई युवा पीढ़ी में सुसंस्कारों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। समाज में तेजी से गिरते मूल्यों को देखते हुए सरकार ने पाठ्यक्रम में भी मूल्य शिक्षा अपनाने पर जोर दिया है। इसी को देखते हुए शिक्षा प्रभाग ने भी देशभर की विभिन्न यूनिवर्सिटी के साथ एमओयू साइन किया है। इसके तहत ये यूनिवर्सिटी अपने यहां ब्रह्माकुमारी द्वारा विकसित किए गए पाठ्यक्रम को डिप्लोमा-डिग्री कोर्स के रूप में संचालित कर रही हैं। शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष एवं संस्थान के कार्यकारी महासचिव बीके मृत्युंजय के प्रयासों से ही मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में संचालित करने की पहल की गई है। ब्रह्माकुमारीज़ दूरस्थ शिक्षा के डायरेक्टर डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि के मार्गदर्शन में सभी वैल्यू एजुकेशन कोर्स संचालित हो रहे हैं।

बीके मृत्युंजय
कार्यकारी सचिव,
अध्यक्ष (शिक्षा प्रभाग)
ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

शिक्षा प्रभाग

शिक्षा प्रभाग द्वारा विश्वविद्यालयों में संचालित पाठ्यक्रम...

वैल्यू एजुकेशन एंड स्प्रीचुअलिटी कोर्स

- डिप्लोमा इन वैल्यू एजुकेशन एंड स्प्रीचुअलिटी
  अवधिः एक वर्ष, योग्यताः 12वीं
- बीएससी (वैल्यू एजुकेशन एंड स्प्रीचुअलिटी) लेटरल एंट्री
  अवधिः दो वर्ष, योग्यताः मूल्य शिक्षा में डिप्लोमा
- बीएससी (वैल्यू एजुकेशन एंड स्प्रीचुअलिटी)
  अवधिः तीन साल, योग्यताः 12वीं
- पीजी डिप्लोमा (वैल्यू एजुकेशन एंड स्प्रीचुअलिटी)
  अवधिः एक वर्ष, योग्यताः स्नातक
- एमएससी (वैल्यू एजुकेशन एंड स्प्रीचुअलिटी) लेटरल एंट्री
  अवधिः एक वर्ष, योग्यताः पीजी डिप्लोमा वैल्यू एजुकेशन
- एमएससी (वैल्यू एजुकेशन एंड स्प्रीचुअलिटी)
  अवधिः दो वर्ष, योग्यताः स्नातक

काउंसलिंग एंड स्प्रीचुअल हेल्थ कोर्स

- डिप्लोमा (काउंसलिंग एंड स्प्रीचुअल हेल्थ)
  अवधिः एक वर्ष, योग्यताः 10वीं
- पीजी डिप्लोमा (काउंसलिंग एंड स्प्रीचुअल हेल्थ)
  अवधिः एक वर्ष, योग्यताः स्नातक
- पीजी डिप्लोमा इन वैल्यूज इन हेल्थ केयर
  अवधिः एक वर्ष, योग्यताः स्नातक
- एमएससी (काउंसलिंग एंड स्प्रीचुअल हेल्थ) लेटरल एंट्री
  अवधिः एक वर्ष, योग्यताः पीजी डिप्लोमा काउंसलिंग
- एमएससी (काउंसलिंग एंड स्प्रीचुअल हेल्थ)
  अवधिः दो वर्ष, योग्यताः स्नातक

योगा एंड वैल्यू एजुकेशन कोर्स

- पीजी डिप्लोमा (योगा एंड वैल्यू एजुकेशन)
  अवधिः एक वर्ष; योग्यताः स्नातक
- एमएससी (योगा एंड वैल्यू एजुकेशन)
  अवधिः दो वर्ष; योग्यताः स्नातक
- एमएससी (योगा एंड वैल्यू एजुकेशन) लेटरल एंट्री
  अवधिः एक वर्ष; योग्यताः पीजी डिप्लोमा योगा
- एमबीएः स्व प्रबंधन एवं आपदा प्रबंधन
  अवधिः दो वर्ष; योग्यताः स्नातक

भारत देश में प्राचीन काल से भारतीय शिक्षा पूरे दुनियाभर में अच्छे संस्कारों के लिए जानी जाती है। नई पीढ़ी को संस्कारवान बनाना है तो शिक्षा में नैतिक मूल्यों से जोड़ना होगा। ब्रह्माकुमारीज़ का शिक्षा प्रभाग जिस तरह से बच्चों के लिए कार्य कर रहा है। ऐसे प्रयोजन पूरे देशभर में युवाओं के लिए करने की जरूरत है। यहां के लोगों का मूल्यनिष्ठ जीवन इसका सशक्त उदाहरण है।

जसवंत सिंह यादव
श्रम, कौशल एवं नियोजन मंत्री
राजस्थान सरकार

आजकल के युवाओं को सही रास्ते पर ले जाने के लिए जीवन में अच्छे गुणों का होना जरूरी है। इससे ही हम सही और सभ्य समाज बना सकेंगे। परन्तु माता-पिता की भी भूमिका इसमें महत्वपूर्ण हो जाती है। माता-पिता को भी चाहिए कि वे भी बच्चों को संस्कार के प्रति प्रेरित करें। ब्रह्माकुमारी संस्थान ने मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम के रूप में शामिल करने का जो बीड़ा उठाया है, इससे समाज को लाभ मिलेगा।

प्रो. डॉ. अनिल सहस्त्रबुधे
अध्यक्ष
तकनीकी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली

मूल्य शिक्षा ग्रहण करना एक पुण्य का कार्य है क्योंकि यह मनुष्य के मन-मस्तिष्क को मनोविकारों से मुक्त करके जीवन जीने की कला सिखाती है। इससे हमारा जीवन स्वयं तथा समाज के लिए आदर्श बनता है। मानसिक कौशल के साथ मूल्यों का जीवन में समावेश जीवन की स्वीकार्यता को व्यापक बनाता है। ब्रह्माकुमारी संस्थान की यह पहल समाज में मील का पत्थर साबित होगी।

डॉ. एम. अरूल
डायरेक्टर
अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु

आज समाज के प्रत्येक व्यक्ति को मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है। यह महान कार्य ब्रह्माकुमारी का शिक्षा प्रभाग कर रहा है। वर्तमान समय में नई पीढ़ी में मूल्यों का जो पतन देखा जा रहा है, वह शिक्षा में मूल्य शिक्षा को सम्मिलित नहीं करने का दुष्परिणाम है। मूल्य हमें जीवन की सच्चाई का सामना करना सिखाते हैं। साथ ही परिवार व समाज के प्रति नैतिक जिम्मेवारियों को पूरा करने के प्रति सचेत करते हैं।

डॉ. सी. वेंकटेश्वर राव
वाइस चांसलर
डॉ. एनटीआर हेल्थ यूनिवर्सिटी, विजयवाड़ा

वर्तमान समय में विश्वविद्यालयों द्वारा जो डिग्रियां प्रदान की जा रही हैं, उनका जीवन से संबंध नहीं रह गया है। वर्तमान शिक्षा विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने में असफल साबित हो रही है। इससे समाज में अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। हर्ष की बात है कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिक्षा में मूल्यों का समावेश करने के लिए अनेक पाठ्यक्रम संचालित करने का सराहनीय प्रयास किया जा रहा है।

उमेश राजदेरकर
डायरेक्टर
यशवंतराव चव्हाण मुक्त विश्वविद्यालय

संपादकीय

अपराध नियंत्रण में सहायक हो सकता है राजयोग

जब भी बात अच्छे समाज की आती है तो हर तरफ बुद्धि जाती है। परन्तु सबसे रोचक पहलू यह है कि हर कोई इस बात पर सहमत दिखता है कि संस्कार को बढ़ावा देने के लिए कोई ना कोई ऐसा प्रयास किया जाए जिससे समाज की पीढ़ी संस्कारित हो सके। अर्थात् मूल्यवान जीवन जिसमें मनुष्य के अन्दर मानवीय श्रेष्ठ मूल्य हों। अगर मनुष्य के जीवन में मूल्य आ जाएं तो उसके जीवन में बुराइयों के लिए कोई भी स्थान नहीं बचेगा। वैसे ही जैसे प्रकाश आने पर अंधकार भाग जाता है। वास्तव में अपराध और हिंसा भी तो बुराई ही है। जाहिर है मूल्यों और सदबुद्धि की कमी से बुराई उसी प्रकार पनप जाती है जैसे कि खेत में खरपतवार। आखिर मूल्य कैसे आएंगे जीवन में। वर्तमान समय यह सोचने की जरूरत है। कानून और शिक्षा तो हो परन्तु उसके साथ मनुष्य के अन्दर समाप्त हो रहे अच्छे संस्कार को भी लाने के लिए भागीरथ प्रयास करने की जरूरत है। योग के पहलू भी भिन्न हैं। एक शारीरिक योग है जिससे शरीर को ठीक रखने में मदद मिलती है। परन्तु विचारों और संस्कारों के निर्माण की उत्पत्ति तो मन से होती है। मन को पवित्र और सशक्त बनाने के लिए राजयोग है। राजयोग आत्मा से परमात्मा को जोड़ने का सरल और सहज माध्यम है, जिससे परमात्मा की दी हुई शक्तियां मनुष्य के अंदर प्रवेश करती हैं और विचारों में शुद्धता आ जाती है। राजयोग के अभ्यास से मनुष्य का जीवन फूल की तरह बन जाएगा।

बोध कथा जीवन की सीख

देवताओं का अभिमान और परमेश्वर

एक बार देवासुर-संग्राम हुआ। उसमें देवताओं को विजय मिली और असुर हार गए। देवताओं की विजय में प्रभु की कृपा ही थी जिसे देवता समझ न पाए। उन्होंने सोचा यह विजय हमारी है और यह सौभाग्य-सुयश केवल हमारे ही पराक्रम का परिणाम है। भगवान को देवताओं के इस अभिमान को समझते देर नहीं लगी। वे उनके अहंकार को दूर करने के लिए एक अद्भुत यक्ष के रूप में प्रकट हुए। देवता उनके इस रूप को समझ नहीं सके। उन्होंने सर्वकल्प अग्निदेव को उनका पता लगाने के लिए भेजा। अग्निदेव के वहां पहुंचने पर यक्ष रूप भगवान ने उनसे प्रश्न किया कि 'आप कौन हैं?' अग्निदेव ने कहा- 'तुम मुझे नहीं जानते? मैं इस विश्व में 'अग्निदेव' नाम से प्रसिद्ध जातवेदा हूं। यक्ष रूप भगवान ने पूछा- 'ऐसे प्रसिद्ध तथा गुण-संपन्न आपमें क्या शक्ति है?' इस पर अग्निदेव बोले कि 'मैं इस चराचर जगत को जलाकर भस्म कर सकता हूं।' इस पर (यक्ष रूप में) भगवान ने उनके सामने एक तिनका रख दिया और कहा- कृपा कर इसे जलाइए।' अग्नि ने बड़ी चेष्टा की, क्रोध से स्वयं पैर से चोटी तक प्रज्वलित हो उठे पर वे तिनके को न जला सके। अंत में निराश तथा लज्जित होकर लौट आए और देवताओं से बोले कि 'मुझे इस यक्ष का कुछ भी पता न लगा। इसके बाद सबकी सहमति से वायु उनके पास पहुंचे। इसी तरह भगवान ने वायुदेव से भी वही प्रश्न पूछे और एक तिनका उड़ाने को कहा लेकिन वह कुछ नहीं कर पाए और निराश होकर लौट आए। अन्त में देवताओं ने इन्द्र से कहा 'माघवन्! आप ही पता लगाएं कि यह यक्ष कौन है?' इंद्र के वहां जाने से पहले ही यक्ष अंर्तध्यान हो गए। अंत में इंद्र की दृढ़ भक्ति एवं जिज्ञासा देखकर मां पार्वती प्रगट हुईं। इंद्र ने उनसे पूछा माँ, यह यक्ष कौन था? तो उन्होंने कहा वे यक्ष प्रसिद्ध पारब्रह्म परमेश्वर थे। इनकी ही कृपा एवं लीला शक्ति से असुर पराजित हुए हैं। आप लोग तो केवल निमित्त मात्र रहे। आप जो इसे अपनी विजय तथा शक्ति मान रहे हैं, वह आपका मिथ्या अहंकार है। इसे ही दूर करने के लिए परमेश्वर ने आपके गर्व को भंग किया है। विश्व में जो बड़े-बड़े पराक्रमियों का पराक्रम, बलवानों का बल, विद्वानों की विद्या, तपस्वियों का तेज एवं ओजस्वियों का ओज है, वह सब उसी प्रभु की लीला है। विश्व की संपूर्ण हलचलों के केन्द्र एकमात्र वे ही परमेश्वर हैं। प्राणी का अपनी शक्ति का अहंकार मिथ्या है। मां के वचनों से इन्द्र की आंखें खुल गईं।

परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिमान हैं, हम सभी मास्टर सर्वशक्तिमान हैं...

मेरी कलम से

डॉ. इंजी. आलोक सक्सेना]
दूरदर्शन दिल्ली में टेक्नीशियन डायरेक्टर
प्रयोगधर्मी व्यंग्यकार एवं प्राकृतिक चिकित्सक

किसी भी उत्कृष्ट सफलता को पाने के लिए निरंतर एकाग्रता और अभ्यास की जरूरत होती है। उसी प्रकार परमपिता परमात्मा यानी ईश्वर को दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि के बिना नहीं जाना जा सकता। हां, भावनात्मक लगाव कितना भी किया जा सकता है। भावनात्मक लगाव तो सिर्फ सतही होता है, विज्ञान के आधार पर अंदरूनी हो ही नहीं सकता है। क्योंकि उसका आधार ही केवल भाव से होता है। ईश्वर को पाने के लिए मन-बुद्धि और दृष्टि की संकल्पशीलता चाहिए। भगवान की वास्तविक पहचान केवल ज्ञान के बल पर की जा सकती है। इस 'घोर कलियुग' में भगवान कोई शेर पर सवारी करते हुए आपके मोहल्ले में उतरकर नहीं आएंगे। न ही तथास्तु कहकर संपूर्ण धरा को एकाएक पावन बना देंगे। वह सर्वविद्यमान यानी कण-कण में भी नहीं हैं। इतना सर्वशक्तिमान है, प्रेम का सागर है, ज्ञान का सागर है, शक्तियों का भंडार है भला कण-कण में क्यों होगा? यह तो भक्तिमार्ग की भावना है कि वह सब जगह है जो कि गलत धारणा है। गलत धारणा की लीक पर लोग चलते आ रहे हैं। क्योंकि वह ज्ञान लेना ही नहीं चाहते। अपनी मनमत पर ही चलना उन्हें बेहतर लगता है और फिर ज्ञान प्राप्त करना हर किसी के वश की बात भी नहीं है, जो ज्ञानी होंगे वही तो लेंगे। भगवान तो 5000 वर्ष के कल्प में एक बार वह भी घोर कलियुग में संगमयुग पर आते हैं और आत्माओं को ज्ञान देकर अपना काम पूरा करके वापस चले जाते हैं।

परमात्मा एक हैं.....

परमपिता परमात्मा जो एक है, जो निराकार है (जो साकार अर्थात् शरीरयुक्त है वह ईश्वर ही नहीं), जो अविनाशी है, जो गर्भ से जन्म नहीं लेता, जो अजन्मा, अशरीरी, अभोक्ता, सदाशिव, ज्योतिर्लिंगम् स्वरूप, ओंकारेश्वर, ज्ञानेश्वर, शक्ति सागर, अहिंसक, सर्वज्ञ, प्रेम का सागर, ज्ञान का सागर, सुख-शांति और आनंद का सागर है। जिसको सारी सृष्टि की आत्माएं याद करती हैं। वह सब आत्माओं का पिता है। जिसे परमपिता परमात्मा परमेश्वर, भगवान, ईश्वर, अल्लाह, जीसस, वाहेगुरु, परवरदिगार के अलग-अलग नामों से जाना जाता है। देवी-देवता अनेक हो सकते हैं परंतु 'परमपिता परमात्मा' तो एक ही है।

5000 वर्ष का एक कल्प बार-बार रिपीट होता है। जो पहचान लेता है और कहना मान लेता है वह तर जाता है। उसका एक जन्म नहीं पूरे 21 जन्म सुधर जाते हैं।

परमात्मा सर्व आत्माओं के पिता हैं...

भगवान तो एक ही है जिसको पतित-पावन कहा जाता है। वह सर्वशक्तिमान है। सर्वशक्तिमान का अर्थ इतना ही है कि परमात्मा बिना किसी के सहायता के अपने सब कार्य पूर्ण कर सकता है। परमपिता परमात्मा परमेश्वर प्रत्यक्ष होकर कभी दिखाई नहीं देता। वह तो अनुभव के आधार पर प्रत्यक्ष मन की आंखों से निरंतर देखा जाता है। आज मेरा परमपिता परमात्मा पर पूरा दृढ़ निश्चय है कि वह है और सदा रहेगा। भारत ही अविनाशी खंड है। यहां देवी-देवता अनेक हो सकते हैं मगर परमपिता परमात्मा यानी कि भगवान, परमेश्वर तो एक ही है। जो देवी-देवताओं का भी पिता है क्योंकि परमपिता परमात्मा तो सर्व आत्माओं का पिता है।

मैं संपूर्ण जीवन विद्यार्थी बन गया

ब्रह्माकुमारी विद्यालय से जुड़कर मैं संपूर्ण जीवन विद्यार्थी बन गया। यहां मुझे परमार्थ ज्ञान के सर्व खजाने मिले। ज्ञान से असीम शक्तियों व अनुभवों की प्राप्ति हुई। इस विश्व रंगमंच के क्रिएटर, डायरेक्टर और मुख्य एक्टर अर्थात सर्वशक्तिमान यानी भगवान का परिचय मिला। हम बच्चे उसकी संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। ब्रह्माकुमारी विद्यालय में 'राजयोग' को सीख कर और सीधे ईश्वर के साथ जुड़ जाने के बाद तो मुझे बार-बार यही लगता है 'जाने क्या देखा मुझमें, मुझे प्यार कर लिया। मेरे लाडले कहा, आंचल में भर लिया'। 'नयनों से जादू करके, गम सारा हर लिया'।

परमात्मा की मदद महसूस होती है...

जब आप ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ते हैं और आपको एक सुनहरा अवसर मिलता है सीधे भगवान के साथ जुड़ने का तो सामने वाला आपके विश्वास, उमंग और उत्साह को देखकर यही कह उठता है कि 'हां, तुम्हें ही तो भगवान मिलेंगे। बड़े अच्छे जो हो। पहले अपने अंदर की कमियों को तो देखो। 'दरअसल, ऐसी परिस्थिति में सामने वाला मनुष्य आपके अंदर की सिर्फ कमियों को देख रहा होता है। आपकी अच्छाइयों को नहीं। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि परमपिता परमात्मा जिसे हम प्यार से 'बाबा' कहते हैं, उससे हमें सेकंड में दिव्य बुद्धिभरा सकारात्मक योगबल, शक्तियां व अनुभव प्राप्त होते हैं, जो अमूल्य हैं।

हिसाब चुक्तू, किताब बंद

अध्यात्म की नई उड़ान...

डॉ. सचिन] मेडिटेशन एक्सपर्ट

एक साधु को, राजा के सिपाई पकड़ लेते हैं और उसको कहते हैं कि राजमहल में जो चोरी हुई है वो तुमने कि है क्योंकि चोरी के प्रमाण हमें मिले हैं। इस पर वह साधु कुछ नहीं कहता और चुपचाप उन सैनिकों के साथ चला जाता है। बाद में उसे कारागार में बंद कर दिया जाता है। सात दिन के बाद जो असली चोर है वो पकड़ा जाता है और राजा साधु को छोड़ने का आदेश देते हैं। इस साधु को छोड़ दिया जाता है और वह कुछ नहीं कहता है। चुपचाप वहां से जाने लगता है। इस पर राजा उससे कहते हैं रूको हमने तुम पर चोरी का आरोप लगाया और जेल में डाल दिया, अब तुमको छोड़ रहे हैं और तुमने ये भी नहीं पूछा कि कारागार में क्यों डाला था। अब ये भी नहीं पूछते कि क्यों छोड़ रहे हो। इस पर साधु कहता है राजन! जब आपने मुझे पकड़ा और कारावास में डाला तो शायद ये मेरे ही किसी और जन्म का पाप होगा। इस जन्म का मुझे पता है मैंने कोई पाप नहीं किया है, परन्तु ऐसा होने के बाद भी आपके सिपाई मुझे पकड़ते हैं और यदि में डालते हैं तो जरूर इसके पीछे कोई राज होगा। हो सकता है कि किसी और जन्म पहले मैंने कोई ऐसे कर्म किए होंगे, उसी का ये फल था। इसके लिए मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है।

इस ब्राह्मण जीवन में भी हमारे बहुत आत्माओं के साथ हिसाब-किताब हैं। जब तक हम वो सारे हिसाब-किताब चुक्तू नहीं कर देते हम वापस घर नहीं जा सकते हैं। हमें नहीं पता कि हमने किस-किस जन्म किन-किन के साथ क्या किया था। हो सकता किसी जन्म में हम बहुत बड़े राजा हों और किसी दूसरे राज्य पर आक्रमण कर दिया। उस दूसरे राजा को हरा दिया और हजारों-लाखों सैनिक मारे गए। हो सकता है किसी जन्म बड़े साहूकार थे, जमींदार थे। किसी की जमीन हड़प ली और वो किसान उसके परिवार सहित तड़प-तड़प के मर गए। तो इस संसार में ऐसी असंख्य आत्माएं हैं, जिनके साथ हमारे हिसाब-किताब हैं। **अव्यक्त महावाक्य हैं- ब्राह्मण (ब्रह्मावत्स) के हिसाब-किताब ब्राह्मण द्वारा ही चुक्तू होंगे।** तो जैसे ही हम ब्राह्मण बनते हैं एक नया जीवन जैसे ही चालू होता है ये हिसाब-किताब भी चालू हो जाते हैं। हमारे हिसाब-किताब इन ब्राह्मण द्वारा चुक्तू होने वाले हैं और वही हमारे जन्म-जन्म जिनके साथ हम थे, जिनके साथ शायद लड़ाई कि थी, जिनको शायद सताया था दुःख दिया था, वही सभी इसी जन्म में हमारे पति-पत्नी, बच्चा, दोस्त, पड़ोसी, बॉस, भाई-बहन बनकर आए हैं। हमने अगर कई आत्माओं को पहले या ब्रह्मावत्स बनने के बाद दुःखी किया है तो उस आत्मा के साथ हमारा कार्मिक हिसाब-किताब बना हुआ है। सबसे हिसाब-किताब चुक्तू करने का एक ही मार्ग है योग में सबसे जिनके साथ हमने गलत किया है, उनसे माफी मांगें, जिन्होंने हमें दुःख दिए हैं उन्हें माफ कर दें और सबके प्रति शुभ भावना रखें। तो हिसाब चुक्तू होते ही किताब बंद हो जाएगी।

प्रेरक विचार Spiritual THOUGHTS

स्वामी विवेकानंद, आध्यात्मिक गुरु

"एक विचार लो, उस विचार को अपना जीवन बना लो, उसके बारे में सोचो, उसके सपने देखो, उस विचार को जियो, अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों शरीर के हर हिस्से को उस विचार में डूब जाने दो और बाकी सभी विचारों को किनारे रख दो... यही सफल होने का तरीका है।"

महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता

"ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरने वाले हो, ऐसे सीखो की तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो।"

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ की मिसाल है ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय

नारी तू नारायणी....

- विश्व का एकमात्र नारी शक्ति द्वारा संचालित सबसे बड़ा संगठन, अब तक मिल चुके हैं कई अवार्ड
- वर्ष 1937 से ही महिला सशक्तिकरण की अलख जगा रहा यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय

शिव आमंत्रण ➤ माऊंट आबू

नारी तुम ही जगत कल्याणी, जगत माता हो... तुम ही शिव की शक्तियां हो.... तुम ही पतित पावनी मां गंगा, यमुना-जमुना, सरस्वती, कावेरी और नर्मदा हो, तुम ही भारत माता, भाग्य विधाता हो.... तुम्हारा ये जन्म इस जग के उद्धार और विश्व परिवर्तन के लिए हुआ है... तो अब जागो और सोई हुई अपनी शक्तियों को पहचानो.... सारा विश्व तुस से आस लगाए परिवर्तन के लिए आह्वान कर रहा है... तुम्हें ही इस दुनिया को स्वर्णिम दुनिया बनाना है। ये पुकार स्वयं परमात्मा की है।

इन्हीं शब्दों को साकार करते हुए और बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का संदेश देते हुए वर्ष 1937 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की नींव रखी गई। संस्था के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने नारी सशक्तिकरण की ऐसी अलख जगाई कि आज नारी विश्व परिवर्तन का आधार बन गई है। वर्ष 1937 में रोपा गया ये पौधा आज वटवृक्ष बन गया है। आज संस्था में 46 हजार से अधिक समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनें निःस्वार्थ भाव से समाज कल्याण के दिव्य कार्य में दिन-रात लगी हुई हैं। इन बहनें की अथक मेहनत और परिश्रम का ही नतीजा है कि आज भारत की प्राचीन संस्कृति आध्यात्मिकता और राजयोग का संदेश विश्व के कोने-कोने में गूंज रहा है।

ब्रह्माकुमारी संगठन पूरे विश्व में एकमात्र नारी शक्ति का सबसे बड़ा संगठन है। इसकी मुखिया भी 103 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी हैं, जिनके कुशल मार्गदर्शन और नेतृत्व में ये संगठन दिनोंदिन ऊंचाई की ओर बढ़ रहा है। इसकी पूरी बागडोर बहनों के ही हाथों में है। बहनों के कुशल मार्गदर्शन और ममता की छांव में आज विश्वभर में दस लाख से अधिक लोग अपना जीवन सफल कर रहे हैं। अपनेपन, आत्मीयता के साथ आध्यात्मिक पथ पर निरंतर आगे बढ़ते जा रहे हैं।

जाति और धर्म भेद से परे है संस्था

आज दुनिया में तमाम समस्याओं और परेशानियों की जड़ जाति, धर्म, समाज का भेद ही है। ये संस्था इन सबसे परे विश्व एक परिवार है के ध्येय को लेकर पिछले 82 वर्षों से कार्य कर रही है। यहां न ऊंच-नीच का बंधन है, न धर्म-संप्रदाय का। यहां एक ही रिश्ता है भाईचारे का। क्योंकि इन सब बंधनों में बंधकर ही आज मानव का जीवन तमाम समस्याओं से घिर चुका है। यदि हमें विश्व को नई राह दिखाना है, सकारात्मक परिवर्तन लाना है तो इन सबसे परे ऊपर उठना होगा।

46000
ब्रह्माकुमारी बहनें जुटी
विश्व परिवर्तन
के महान कार्य में

बेटी बचाओ को लेकर देशभर में अलख

बेटी बचाओ को लेकर सरकार के साथ संस्था वर्षों से लोगों में अलख जगा रही है। संस्था के देशभर में स्थित 4500 से अधिक सेवाकेंद्रों पर हर वर्ष बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ से संबंधित अनेकों कार्यक्रम, सम्मलेन, सेमीनार और वर्कशॉप का आयोजन किया जाता है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने कई बेटियों की सोच में परिवर्तन कर उनके सपनों को पंख लगाए हैं। यही नहीं देशभर के महिला संगठनों, क्लबों, नारी निकेतन केंद्र में भी संस्था द्वारा समय-समय पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

20 प्रभागों में से एक है महिला प्रभाग

ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय द्वारा समाज के सभी वर्गों तक आध्यात्मिक ज्ञान का संदेश देने के लिए 20 प्रभाग बनाए गए हैं। इनमें से महिला प्रभाग एक है। इसके माध्यम से हर वर्ष देशभर के सेवाकेंद्रों पर महिला उत्थान, महिला सशक्तिकरण, भ्रूण हत्या रोकने, महिला अपराध पर नियंत्रण, बालिका सुरक्षा, महिला सम्मान, बाल व्यक्तित्व विकास शिविर, सम्मेलन आदि का आयोजन किया जाता है। साथ ही समाज की पिछड़ी महिलाओं के लिए साक्षर बनाने के प्रयास भी संस्था द्वारा किए जा रहे हैं। कई गांवों की महिलाओं को अक्षर ज्ञान दिया जा रहा है। संस्था से जुड़कर कई बुजुर्ग माताएं आज पढ़ना-लिखना सीख गई हैं।

आत्म विश्वास ही सबसे बड़ी शक्ति

किशोर मन सबसे संवेदनशील और नाजुक होता है। उम्र के इस दौर में मन को जो दिशा दे दी जाए वह उसी ओर आगे बढ़ जाता है। यही कारण है कि उम्र के इस दौर में ज्यादातर किशोर बालक-बालिकाएं भटक जाते हैं और गलत संगत में पड़ जाते हैं। इसी को समझते हुए संस्था द्वारा किशोरी बालिकाओं को आत्मरक्षा, कराटे आदि की ट्रेनिंग दी जाती है। सबसे मुख्य बात उनमें आत्म विश्वास विकसित किया जाता है ताकि वह जीवन में आने वाली हर एक परिस्थिति और समस्या का सामना आसानी से कर सकें।

सपनों को पंख लगाएं, उड़ना सीखें

संस्थान की ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा समय-समय पर विभिन्न स्कूलों में जाकर छात्राओं को आगे बढ़ने और अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए मोटिवेट किया जाता है ताकि वह अपने सपनों को दबाए नहीं बल्कि उन्हें पंख लगाकर उड़ना सीखें।

राजयोग से सिखा रहीं जीने की राह

संस्थान में समर्पित सभी 46 हजार बहनें स्वयं आध्यात्मिक रूप से सशक्त और शक्तिशाली होने के साथ आत्म विश्वास से भरपूर हैं। सभी बहनें दिन-रात समाज को सकारात्मक चिंतन की ओर ले जाने के लिए प्रयासरत हैं। आज इनका जीवन दूसरों के लिए नई आशा की किरण दिखा रहा है। आज इस महाअभियान से 15 लाख से अधिक लोग जुड़ चुके हैं।

दादी जानकी: योग से उम्र को दी मात

संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकीजी ने यह साबित किया है कि यदि जीवन में राजयोग को शामिल किया जाए तो उम्र को भी मात दी जा सकती है। दादी जानकी 103 साल की उम्र में भी आज विश्वभर में यात्राएं कर आध्यात्मिक संदेश जन-जन को पहुंचा रही हैं। आपके कुशल निर्देशन में संस्था द्वारा विश्व के 140 देशों में ईश्वरीय ज्ञान दिया जा रहा है। साथ ही आपने भारतीय संस्कृति को विश्व के सामने लाने का अनोखा कार्य किया है। राजयोग का ही चमत्कार है कि आपको विश्व की सबसे स्थिर मन की महिला का अवार्ड भी मिला हुआ है।

आईएएस से लेकर डॉक्टरेट बहनें भी शामिल...

कई लोगों के मन में भ्रांति रहती है कि ब्रह्माकुमारी संगठन में वही बहनें जुड़ती हैं जो परिवार से आर्थिक रूप से कमजोर और कम पढ़ी-लिखी होती हैं। जबकि हकीकत में ऐसा नहीं है। आज इस संगठन में आईएएस, आईपीएस, साइंटिस्ट, प्रोफेसर, अभिनेत्री, पत्रकार, शिक्षिका, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, उद्योगपति, बैंकर और उच्चशिक्षित बहनें भी जुड़कर लोगों को जीने की राह दिखा रही हैं। महत्वपूर्ण पदों पर काम करने के बाद भी कई बहनें उन्हें त्यागकर आज संस्था में समर्पित रूप से अपनी सेवाएं दे रही हैं। इन सभी का एक ही लक्ष्य है 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन'। खुद को बदलकर ही दूसरों को बदला जा सकता है।

राजयोग से सुलझेगी जीवन की पहेली

- नियमित राजयोग के अभ्यास से कैंसर, हाई ब्लॉकेज, डायबिटीज, मानसिक बीमारी से पा सकते हैं निजात, हजारों लोगों ने राजयोग के प्रयोग से बीमारी पर पाया काबू
- ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़कर आज 15 लाख से अधिक लोग नियमित करते हैं राजयोग मेडिटेशन, जीवन जीने की मिली नई कला, शांतिमय बना जीवन

हजारों लोगों का नशा छूटा, जीवन बन गया खुशहाल

शिव आमंत्रण ➤ आबू रोड

मानसिक तनाव, समस्याओं, परेशानियों से घिरे मानव का आज तेजी से आध्यात्मिकता की ओर झुकाव हुआ है। लोगों को अब आध्यात्मिकता और योग का महत्व समझ में आने लगा है। पढ़े-लिखे लोगों में स्वास्थ्य को लेकर बढ़ती जागरुकता भी इसका एक कारण है। जहां योग, प्राणायाम, जाप, हठयोग, यम एवं नियम तन-मन को सुकून देते और स्वस्थ्य बनाए रखते हैं। वहीं इन सबसे हटकर राजयोग एक ऐसा योग है जो आत्मा का परमात्मा से मिलन कराता है। इसके अभ्यास से आत्मा की कमजोरी समाप्त हो जाती है और वह दिव्य गुणों और शक्तियों से भरपूर होकर सतोप्रधानता की ओर बढ़ती है। आइए जानते हैं क्या है राजयोग? और क्या हैं इसके लाभ? प्रस्तुत है एक रिपोर्ट-

राजयोग क्या है?

राजयोग को योगों का राजा कहा जाता है। इसमें सभी योगों का सार समाया हुआ है। यह योग हमारे मन से दूषित विचारों को दूर कर हमें पावन बना देता है। राजयोग अंतर्जगत की एक यात्रा है। इससे हम अपने विचारों को एक सकारात्मक चिंतन की ओर ले जाते हैं और श्रेष्ठ दिशा देते हैं। जब हमारे विचार शुद्ध, पवित्र, दूसरों के लिए सुखदायी, शुभभावना-शुभकामना संपन्न होंगे तो हमारी बुद्धि भी उसी अनुसार निर्णय देती है। बुद्धि द्वारा दिए गए निर्णय के आधार पर ही हमारी कर्मेन्द्रियां शरीर से कर्म करती हैं। जैसे-जैसे राजयोग के माध्यम से हमारा सकारात्मक और श्रेष्ठ चिंतन बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे हमारे विचारों में सकारात्मकता आती जाती है। दूसरे शब्दों में कहें तो राजयोग के माध्यम से हमें खुद की कमी-कमजोरियों को पहचानने, उन्हें दूर करने का मौका मिलता है। जब हम एकांत में बैठकर चिंतन करते हैं तो जीवन से जुड़ी समस्याएं का समाधान मिलने लगता है। चिंतन श्रेष्ठ होने से मन की कार्यकुशलता बढ़ जाती है और कर्मों में प्रवीणता आने लगती है। जब हम अपने कर्मों पर अटेंशन रखते हैं तो हमारे कर्म श्रेष्ठ बन जाते हैं। तनाव, चिंता, दुःख, हीनभावना, पश्चाताप और आत्म ग्लानि कोसों दूर चली जाती है। राजयोग का अभ्यास किसी भी समय, किसी भी स्थान पर किया जा सकता है। इसके लिए उम्र-जाति का बंधन नहीं है।

योग क्या है?

योग का सामान्य अर्थ है जोड़, मिलन या संबंध। वास्तव में दो वस्तुओं के संबंध को योग और विच्छेद को वियोग कहते हैं। संसार की सभी वस्तुएं योग और वियोग से समन्वित हैं। वास्तविक योग चिरस्थायी होता है, जिसमें वियोग लेशमात्र भी नहीं होता।

सांसारिक वस्तुओं या संबंधों के योग को योग नहीं कह सकते क्योंकि उन सभी में वियोग निहित है। उनका संबंध क्षणस्थायी है। संसार की सभी वस्तुएं विनाशी और क्षणभंगुर हैं।

राजयोग से होता है अष्ट शक्तियों का विकास

सहनशक्ति

यह शक्ति भी है तो सहनशीलता का गुण भी है। जब हम इस गुण को अपने जीवन में धारण करते हैं तो यह धीरे-धीरे शक्ति का रूप ले लेती है। यह शक्ति हमारे अंदर आत्म विश्वास पैदा करती है, जो व्यक्ति सहन करता है उसका चरित्र हमेशा ऊंचा दर्शाया जाता है। दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनमें सहनशीलता का मुख्य गुण था। सहनशक्ति ही महानता का आधार है।

समाने की शक्ति

लोग सहन तो कर लेते हैं, लेकिन बात को अपने में समा नहीं पाते हैं जिसके कारण उनकी बनी हुई बात भी बिगड़ जाती है। इस शक्ति की कमी होने के कारण हमारे पारिवारिक संबंधों में कड़वाहट आ जाती है। सहन किया ये तो महानता हो गई, परंतु सहनशक्ति के साथ-साथ समाने की शक्ति भी आवश्यक है। जिस प्रकार सागर अनेक नदियों का किचड़ा वाला पानी समा लेता है उसी प्रकार हमें भी विशाल हृदय बनकर बातों को समा लेना चाहिए।

परखने की शक्ति

आज चारों ओर छल, कपट का वातावरण बना हुआ है। ऐसे समय में हमें परखने की शक्ति की आवश्यकता होती है। इसकी कमी से व्यक्ति धोखा खा जाता है। प्रैक्टिकल जीवन जीने के लिए हमें आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान नहीं होने से व्यक्ति परख नहीं पाता है असली क्या है और नकली क्या है।

निर्णय करने की शक्ति

परखने की शक्ति हो और निर्णय करने की शक्ति न हो तो व्यक्ति को बहुत पश्चाताप करना पड़ता है। हमारी बुद्धि का कांटा एकाग्र है और परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ है तो हम कभी भी परखने और निर्णय के समय धोखा नहीं खा सकते हैं और सही समय पर सही निर्णय लेकर सफलता स्वरूप बन जाते हैं।

सामना करने की शक्ति

राजयोगी, व्यक्ति का सामना नहीं करता है लेकिन परिस्थितियों का सामना वह बड़ी ही सहज रीति से कर लेता है।

सहयोग की शक्ति

जीवन में सहयोग की शक्ति भी बहुत आवश्यक है। एक -दूसरे को हम सहयोग तभी दे सकते हैं जब हमारे संस्कार दूसरे से मेल खाते हैं। अगर संस्कार नहीं मिलते हैं तो सहयोग लेना और देना दोनों ही मुश्किल हो जाता है।

विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति

कई बार हम देखते हैं कि बात तो छोटी सी होती है, लेकिन विस्तार करते-करते उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है और मनुष्य के जीवन में परेशानियां आनी शुरू हो जाती है। जैसे कछुआ कोई भी परिस्थिति आने पर स्वयं को संकीर्ण भी कर लेता है और आवश्यकता पड़ने पर विस्तार भी कर लेता है।

समेटने की शक्ति

जब हम घर से बाहर जाते हैं तो आवश्यकता की वस्तुओं को लेते हैं। उसी प्रकार इस जीवन रूपी यात्रा में हमारी मूल्यवान वस्तुएं हैं पुण्य कर्म का खाता, दुआओं का खाता, श्रेष्ठ विचार, गुण, शक्तियां का खाता तो हमें इसकी संभाल करनी होती है और इसे दूषित संग से बचाना भी होता है।

हठयोग और राजयोग में अंतर...

राजयोगी और हठयोगी दोनों की योगावस्थाओं में महान फर्क है। हठयोगी हठक्रिया द्वारा अपने भीतर प्राणवायु को स्थिर रखने की कोशिश करता है। प्राणवायु के स्थिरता के कारण उसका मन भी धीरे-धीरे स्थिर होने लगता है और अंत में वह मन निद्रा के समान अचैतन्य अवस्था प्राप्त कर लेता है। उसकी इस अवस्था को मृढ़ समाधि कहते हैं। इस अवस्था में न तो विचार रहता है और न ही आनंद। इसके विपरीत राजयोगी की अवस्था भिन्न होती है। वह सुरूचिपूर्वक और सुखमय आसन द्वारा तथा उच्च चिंतन द्वारा मन को एकाग्र करता है, जिस कारण उसकी अवस्था चैतन्य समाधि कहलाती है। राजयोगी का मुख हर्षित तथा कान्तिवान होता है क्योंकि उसकी याद उस सर्वोच्च सत्ता के साथ होती है, जिससे कांतिवान कोई अन्य हो नहीं सकता। जिसकी याद की जाती है उसके लक्षण जरूर आ जाते हैं। अतः राजयोगी के चेहरे पर शीतलता होती है जबकि हठयोगी कांतिहीन होता है। राजयोग से जीवन में कर्मकुशलता और व्यवहार कुशलता आती है। हमारा सांसारिक वस्तुओं और चीजों से अनासक्त भाव हो जाता है।

योगाभ्यास कैसे किया जाए?

राजयोग करना बहुत सरल है। इसलिए इस योग को दूसरे शब्दों में 'सहज राजयोग' भी कहा जाता है। इसके अभ्यास के लिए नीचे 5 सरल कदम बताए गए हैं...

- **घर:** राजयोग अभ्यास के लिए खास रूम अथवा जगह की आवश्यकता नहीं है। कोई भी एकांत और शांत स्थान या आरामदायक कुर्सी भी चल सकती है।
- **कार्य स्थल:** जहां भी आप कामकाज करते हैं। जैसे- पानी पीने के समय कुछ क्षणों के लिए अपने भीतर की शान्ति को सुनने का अभ्यास करें।
- **सफर:** एक जगह से दूसरी जगह जाने में जो समय लगता है, पैदल, बस या ट्रेन का सफर हो, इसे हम इस्तेमाल कर सकते हैं।
- **भीड़ भरे स्थान पर:** जैसे ही आप अपने भीतर की शांति को बनाना सीख लेते हैं। आप किसी भी वक्त बहुत ही सरलता से उस अवस्था को पा सकते हैं।
- **अकेले में या सामूहिक रूप से:** योग का सर्वश्रेष्ठ और सुन्दर अनुभव तब हो सकता है जब आप अकेले उस एक परमात्मा के साथ हों।

ऐसे करें राजयोग की अनुभूति

अनुभव करें कि आप एक सक्षम, सशक्त, सफल और खुश इंसान हैं... संकल्प करें कि आप अपने हर विचार एवं प्रतिक्रिया के प्रति जागरूक हैं और उस पर आपका पूर्ण अधिकार है... अनुभव करें कि मैं परमात्मा की संतान हूं और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मेरे प्रत्येक कर्म में सफलता समाई हुई है.... ये वरदान मुझे स्वयं सर्वशक्तिमान परमात्मा ने दिया है... मैं बहुत ही खुश इंसान हूं.... परमात्मा की कृपा से मुझे इतना सुंदर शरीर मिला.... इतना अच्छा परिवार मिला....उसके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें....मन में विचार करें कि मैं एक सफल इंसान हूं.... मुझ जैसा सुखी इस दुनिया में कोई नहीं है.... मेरे सिर पर सदा परमात्मा की छत्रछाया है.... परमात्मा का वरदानी हाथ सदा मेरे सिर पर है.... अनुभव करें जीवन के सुखमय क्षणों को और परमात्मा को इसके लिए धन्यवाद दें... अपनी सारी परेशानियों, जिम्मेदारी, समस्याएं, चिंता, दुःख परमात्मा को सौंप दें.... अनुभव करें परमात्मा ने मुझे सर्व से मुक्त कर दिया है। वह सदा मेरे साथ हैं... परमात्मा मेरे साथी बनकर हर पल मेरा साथ निभा रहे हैं....मेरा जन्म इस संसार में महान कार्यों के लिए हुआ है... मुझे दिव्य और श्रेष्ठ कर्म करना है...धीरे-धीरे इसे अनुभव करें। राजयोग मेडिटेशन के बारे में अधिक जानकारी और इसका अभ्यास सीखने के लिए अपने नजदीकी **ब्रह्माकुमारीज़** के **सेवाकेंद्र** पर संपर्क करें।

वैज्ञानिक शोध....

मेडिटेशन से मन के साथ तन पर भी पड़ता है गहरा प्रभाव

सिर्फ पांच मिनट का ध्यान हमारे शरीर की कोशिकाओं को ऊर्जा से भर देता है। इसका केंद्र प्राणवायु होती है जिसे हम आत्मा कहते हैं। आत्मा से जो संकेत मस्तिष्क को मिलता है वही संकेत पूरे शरीर को देती है। इसलिए आत्मा को शक्तिशाली बनाना आवश्यक है। मन में जैसे विचार उत्पन्न होते हैं वैसा ही हमारा शरीर बनता है। इसलिए मन में सकारात्मक संकल्पों का होना बहुत ही आवश्यक है। यदि हम प्रतिदिन एक निश्चित समय में किसी बीमारी को ठीक करने के लिए मेडिटेशन का प्रयोग करते हैं तो इससे हमारे नेगेटिव सेल खत्म हो जाते हैं और नए सेल का निर्माण होना शुरू हो जाता है। हमारे शरीर के निगेटिव सेल ही अनेक घातक बीमारियों के जिम्मेवार होते हैं। मेडिटेशन हमारी बीमारियों को तो ठीक करता ही है साथ ही मन को शांत व स्थिर भी बनाता है। इससे सिर्फ मानसिक शांति ही नहीं मिलती बल्कि एलर्जी, उत्तेजना, अस्थमा, कैंसर, थकान, हृदय संबंधी रोग, हाई ब्लड प्रेशर, अनिंद्रा आदि बीमारियों से निजात भी मिलती है।

विचारों का मन के साथ शरीर भी पड़ता है प्रभाव

- नार्थ ईस्टर्न यूनिवर्सिटी और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने अध्ययन में मेडिटेशन के प्रभाव को इंटरपर्सनल हॉर्मनी और कंपेशन के रूप में वर्णन किया है। उन्होंने शोध में पाया कि मेडिटेशन का प्रभाव व्यक्ति के पूरे व्यवहार और उसकी जीवनशैली पर पड़ता है। शोध में शामिल प्रतिभागियों को आठ सप्ताह तक दो तरह के मेडिटेशन की ट्रेनिंग दी गई। टेस्ट में पाया कि जिन लोगों ने ट्रेनिंग ली थी, उनमें दूसरों को सहयोग और दुःख-दर्द को समझने की भावना 50 फीसदी पाई गई। जबकि बिना ट्रेनिंग वालों में यह भावना 15 फीसदी रही। इसे जर्नल साइकोलॉजी साइंस में प्रकाशित किया गया।
- हाइडलबर्ग में एसोसिएशन फॉर बायोलॉजिकल रेसिस्टेंस टू कैंसर की निदेशक यॉर्गी इर्मी ने शोध में पाया कैंसर की बीमारी कई बार आवेग से जुड़ी होती है। इसके लिए वे मरीजों को मेडिटेशन करने की सलाह देती हैं। बीमारी ठीक होने की प्रक्रिया में मरीज का रवैया बहुत महत्व रखता है। उनका मानना है इस तरह के शोध से और भी बीमारियों का इलाज मेडिटेशन के द्वारा किया जा सकता है।
- एपिजेनेटिक्स के मशहूर वैज्ञानिक ब्रूस लिप्टन का मानना है हम अपने आपको आत्मविश्वास और अपने रवैये से बहुत सी बीमारियों को ठीक कर सकते हैं। दिमाग जो देखता है उसे रसायन में परिवर्तित कर देता है। रसायन शरीर की कोशिकाओं तक पहुंचते हैं और एपिजेनेटिक्स के लिए जिम्मेदार होते हैं। सेहत का ध्यान रखना जीवनशैली से जुड़ा हुआ है।

विश्व शांति के लिए सामूहिक ध्यान

कहा जाता है कि हम जैसा सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं और उसी अनुसार हमें आसपास का वातावरण नजर आता है। आज विश्व में बढ़ती अशांति और मानसिक समस्याओं को देखते हुए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा योग के माध्यम से शुभ संकल्पों द्वारा सारे विश्व को सकाश (शुभ संकल्प) दिया जाता है। संस्था के लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनें अपने-अपने सेवाकेंद्र पर हर महीने के तीसरे रविवार को शाम 6.30 बजे से 7.30 बजे तक विश्व शांति के लिए सामूहिक योग करते हैं। इस दौरान योग से विश्व को शांति और सकारात्मक वायब्रेशन दिए जाते हैं। साधक भाई-बहनें परमात्मा से शक्ति लेकर सारे विश्व और वातावरण में शांति के प्रकंपन देते हैं, ताकि अशांत, दुखी और समस्याग्रस्त मनुष्यों को शांति मिल सके।

आत्मा का परमात्मा से मिलन ही 'राजयोग'

आत्मा का परमात्मा से मंगल-मिलन ही सच्चा योग है और यह मिलन सर्वश्रेष्ठ होने के कारण इसे राजयोग कहा जाता है। यही योग सभी योगों का राजा है। स्वयं परमपिता परमात्मा शिव अपना सत्य परिचय देकर आत्मा को अपने साथ योग लगाने की विधि बताते हैं, इसलिए इसे राजयोग कहा जाता है। क्योंकि इसका शिक्षक सर्वश्रेष्ठ योगेश्वर स्वयं परमात्मा है। इस योग के अभ्यास से हमारे संस्कार उच्च बनते हैं।

एकाग्रचित होकर राजयोग का अभ्यास करने से मनुष्यात्मा द्वारा किए गए 84 जन्मों के पाप दग्ध हो जाते हैं। धीरे-धीरे आत्मा सतोप्रधानता की ओर बढ़ने लगती है जो आत्मा की उच्चतम अवस्था है। यह योग उसे अपने कर्मेन्द्रियों सहित मन का भी राजा बना देता है।

राजयोग मेडिटेशन से आत्मा अपने सात गुणों से फिर से संपन्न बन जाती है...

ज्ञान

यह आत्मा का पहला गुण है। इसका संबंध मस्तिष्क से होता है। हम देखते हैं बचपन से ही कोई बहुत बुद्धिमान होता है तो कोई मंदबुद्धि।

पवित्रता

आत्मा के इस गुण का सीधा संबंध हमारे इम्यून सिस्टम से होता है। पवित्रता (ब्रह्मचर्य) की शक्ति से ही यह सिस्टम कार्य करता है।

शांति

शांति आत्मा का स्वधर्म है। जितना हम शांति से रहते हैं उतना हमारा मस्तिष्क और शरीर अच्छे से कार्य करता है। शांति प्रत्येक व्यक्ति को पसंद होती है।

प्रेम

प्यार के दो बोल परेशान, दुखी और अशांत आत्मा को प्रसन्न कर देते हैं। प्रेम व स्नेह में वह शक्ति होती है जो पत्थर को भी मोम बना देती है।

सुख

आत्मा की इस शक्ति से हमारी आंतों का सिस्टम मैनेज होता है। सुख अर्थात् खुशी से लीवर और आंतें ठीक तरह से कार्य करती हैं।

आनंद

खुशी की चरम सीमा आनंद कहलाती है। आनंदमय शरीर के हार्मोंस, पिट्यूटरी ग्रंथि, पैंक्रियाज आदि को कंट्रोल करता है।

शक्ति स्वरूप

हमारी अष्ट शक्तियां मिलकर ही हमारे अस्थि तंत्र का निर्माण करती है। शक्तियों की कमी के कारण हमारे जोड़ों में व हड्डियों में दर्द होना शुरू हो जाता है।

राजयोग से भाग जाएंगे ये पांच भूत

काम	क्रोध	लोभ	मोह	अहंकार
राजयोग से हमें स्वयं के वास्तविक स्वरूप आत्मा का ज्ञान होने से ये विकार अपने आप दूर हो जाता है।	राजयोग से मन शीतल हो जाता है। मन का आवेग खत्म होने से क्रोध खत्म हो जाता हो	राजयोगी सदा संतोषी होता है, उसमें इक्कट्ठा करने की प्रवृत्ति खत्म हो जाती है।	राजयोगी वर्तमान में जीता है। जन्म-जन्मांतर के कर्म बंधनों का ज्ञान होने से उसमें अनावश्यक मोह नहीं रह जाता है।	राजयोगी स्वभाव से विनम्र और परोपकारी हो जाता है, इससे ये भूत भी अपने आप भाग जाता है।

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ और अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर
गुरुग्राम, हरियाणा

प्रश्न हम राजयोग के द्वारा कैसे परमपिता परमात्मा को याद करें और कैसे उनसे सर्वशक्तियां प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर परमात्मा को याद करना ऐसे ही होता है जैसे किसी और को याद करते हैं। सिर्फ थोड़ा सा अंतर ये है कि जब भी किसी और को याद करते तो शरीर के रूप मे याद करते हैं। अब हम उस परम आत्मा को याद कर रहे हैं तो पहले मुझे किस स्थिति में बैठना पड़ेगा? आत्मिक स्थिति में जब तक मैं स्वयं को आत्मा समझकर नहीं बैठूंगी तब तक परमात्मा याद नहीं आएगा। आज दिन तक परमात्मा को याद करना क्यों मुश्किल हो रहा था ? क्योंकि याद करने कौन बैठा था- मां बैठी थी। तो मां को कौन याद आएगा, बच्चा याद आएगा। परमात्मा तो याद नहीं आएगा ना, लेकिन आत्मा जब बैठेगी याद करने कि मैं आत्मा हूं तो आत्मा को कौन याद आएगा 'परमात्मा' याद आएगा।

प्रश्न मैं सोचती हूं सिर्फ परमात्मा ही याद आएगा ?

उत्तर हां।

प्रश्न क्या वास्तव में ऐसा हो पाएगा ?

उत्तर जैसे ही आप 'आत्मिक स्थिति' में स्थित हो गए तो आपको परमात्मा ही याद आएगा और याद करना मतलब मैं किसका बच्चा हूं और हमें अपने मन-बुद्धि से उस घर में जाना है जहां के हम रहने वाले हैं। अगर आप यहां बैठे हैं, आप अपने बच्चों को याद करो तो कहां याद करोगे, वो घर में बैठे हैं तो तुरन्त आपके सामने क्या आता जाएगा वो घर में हैं, ये कर रहे हैं, आप उनको वहां देखेंगे तो वही याद करोगे ना। अगर सुबह में याद करते तो कहां याद करते हो? वो स्कूल में हैं। अब हम परमात्मा को याद करेंगे तो कहां याद करेंगे? वो उस घर में है फिर हम भी बुद्धि से उस घर में चलते जैसे हम यहां बैठ कर इस घर में जा सकते हैं, अब हम यहां बैठ कर उस घर में चल सकते हैं और जैसे ही हम यह संकल्प करेंगे परमात्मा की याद स्वत: ही आएगी तो उनकी पवित्रता की शक्ति भी हमारे अंदर आएगी।

मेडिटेशन की तकनीक

जब हम अपनी खुशी को देखते हैं तब बहुत कुछ समझ में आ रहा है कि ये अवधारणाएं कैसे हमारे जीवन पर असर डालती हैं। मैंने ऐसी आदतें बनाई हुई हैं जिस पर अभी तक मैं अपनी जिंदगी जी रही थी, वो अब बदलने की जरूरत है। पिछली कड़ी में हमने बात की थी कि पुरानी अवधारणा मेडिटेशन के माध्यम से बदल सकते हैं।

अब बात करते हैं मेडिटेशन की। पिछली कड़ी में हमने मेडिटेशन के बहुत से तरीकों के बारे में भी देखा था। अगर हम अपने संकल्पों को श्रेणीबद्ध करके एक कड़ी में डालकर मेडिटेट करना सीखते हैं तो फिर किस तरह से वो अवधारणा को परिवर्तित करता जाएगा और जो मैं अवधारणा नई बनाती जाऊं या जो मैं बनाती जाऊं वो पुनर्संशक्त होता जाएगा। कैसे यह सबकुछ संभव होता है। कौन सी वो तकनीक है और क्या क्रियाविधि है इस पर बातचीत करते हैं....

प्रश्न अपनी अवधारणा को बदलना और उस पर एक नई अवधारणा निर्मित करके फिर पूरी लिंक को जैसे चलाना है वैसे चलाते जाना। उसमें राजयोग हमारी कैसे मदद करता है, इसका अभ्यास हम कैसे करें ?

उत्तर वास्तव में राजयोग शब्द में योग का मतलब है संबंध। मान लो मैं आपको याद करती हूं तो मैं कह सकती हूं कि मेरा योग आपके साथ लगा हुआ है। यदि हम किसी की भी याद में होते हैं तो कहते हैं कि इनका योग उनके साथ है। अब राजयोग, राज का मतलब है सर्वोच्च। इसलिए राजयोग माना मेरा संबंध जब उस सर्वोच्च शक्ति के साथ जुटा हुआ है तब हम उस योग को राजयोग कहते हैं। लेकिन वो संबंध जुटने से पहले दोनों का परिचय होना चाहिए। मान लो कोई दो व्यक्ति हैं तो उनके बीच दोस्ती ऐसे ही नहीं हो सकती है, रिश्ता ऐसे ही नहीं जुड़ सकता, उसके लिए पहले मुझे आपका परिचय चाहिए फिर आपको मेरा परिचय चाहिए। परिचय के आधार पर वो धीरे-धीरे रिश्ता जुड़ता है। आज हम सब उस परमात्मा को याद करने की कोशिश करते हैं लेकिन अधिकतर लोगों की यह शिकायत रहती है कि वो बैठते तो हैं, समय निकालते हैं, मन्दिर-मस्जिद वो भी बड़े-बड़े बनाते हैं, दस मिनट के लिए बैठते, लेकिन उस दस मिनट में कितनी देर उनकी याद और कितनी देर मन इधर-उधर भटकता है ये प्रश्न चिंह्न है। हम सारा दिन औरों को याद कर सकते हैं तो भगवान को याद करना इतना मुश्किल क्यों है?

प्रश्न अच्छा फिर हम अपने-आपसे, बाकी लोगों से तो फिर भी बोल देते हैं कि हां, मैं तो रोज सुबह-सुबह पूजा करती हूं लेकिन अपने अन्दर हमें पता होता है कि उस पूजा के दौरान मेरा मन कहां-कहां गया था?

उत्तर करते तो हैं ईमानदारी से हम करना तो चाहते हैं हमारा रोज का समय जो करने के लिए बंधा हुआ है लेकिन वो या तो मुख से है या कोई औपचारिकता वश है। मन से भी याद करना चाहते हैं लेकिन फिर प्रश्न यही आता कि मन भटकता क्यों है। तब फिर कह देते हैं कि मन तो बहुत चंचल है। मन तो एकाग्र ही नहीं होता, मन भटक जाता है, लेकिन महत्वपूर्ण ये है कि क्यों याद करना फिर कहते हैं सीखना पड़ेगा। वास्तव में याद करना सीखना नहीं है। हम सारे दिन में कितने लोगों को याद करते हैं, बच्चों को याद करते हैं, दोस्तों को याद करते हैं, जो लोग पसंद नहीं हैं उनको भी याद करते हैं। अब जितने लोगों को याद करने बैठते हैं, चलते-फिरते काम करते याद नहीं भी करना चाहिए तो भी याद आती हैं। उनको याद करने के लिए तैयारी भी करते, स्थान भी बनाते समय अलग से निकालते सिर्फ 10 मिनट फिर याद क्यों नहीं आती, ऐसा क्यों होता है? ये सबको याद कर सकते हैं, सिर्फ याद ही तो करना है ना बाकी लोगों को याद करने के समय मन क्यों नहीं भटकता? ईश्वर को याद करने के समय मन क्यों भटकता है? इसका कोई कारण ही नहीं है। एक बच्चे को याद करना सिखाया नहीं जाता अपने माता-पिता को कैसे याद करना है। जब हम शांत होकर बैठते हैं और स्वयं को ज्योतिर्बिंदु स्वरूप आत्मा समझकर उस ज्योतिर्बिंदु स्वरूप परमपिता परमात्मा को याद करेंगे तभी हम उनसे अपना संबंध जुटा सकेंगे और उनकी शक्तियों की अनुभूति कर सकेंगे।

क्रमश:

गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा में समर्पित...

ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर

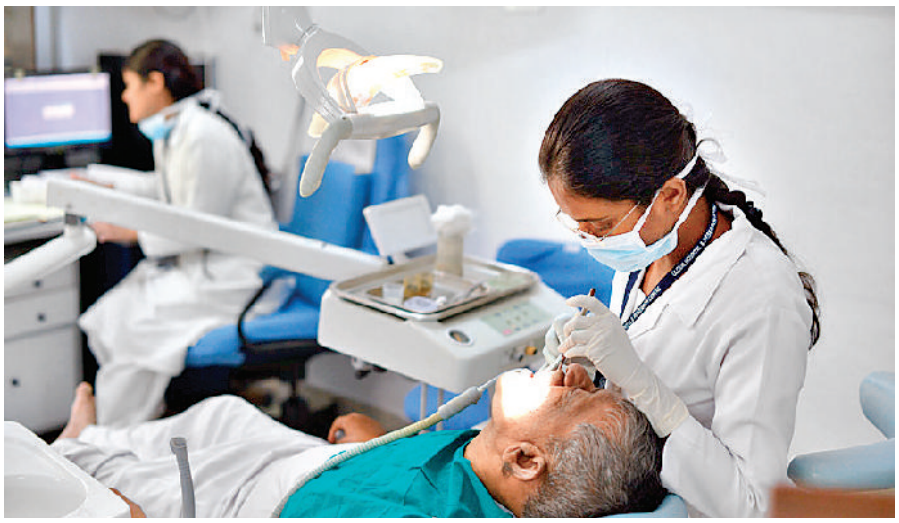

माउंट आबू हिल स्टेशन होने से यहां रोजाना हजारों की संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। ऐसे में यदि कोई पर्यटक गंभीर बीमार हो जाए तो उन्हें इलाज के लिए 200 किमी दूर ले जाना पड़ता था। तब तक कई बार देरी हो जाती थी। इसी को देखते हुए वर्ष 1991 में 457 बिस्तरों के आधुनिक तकनीकों से लैस जे. बाटूमल ग्लोबल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर की स्थापना ब्रह्माकुमारी संस्थान की ओर से की गई। इसकी स्थापना में मील का पत्थर बने संस्थान के महसचिव ब्रह्माकुमार निर्वैर भाईजी, जिनकी प्रेरणा और कुशल मार्गदर्शन में ये हॉस्पिटल बनकर तैयार हुआ। वर्तमान में इसके डायरेक्टर डॉ. प्रताप मिड्ढा हैं।

इस वर्ष हॉस्पिटल की सेवाएं...

● **01 लाख** लोगों की अब तक नि:शुल्क काउंसलिंग ● **36 हजार** लोगों की गांव-गांव जाकर नि:शुल्क चिकित्सा ● **3500 मरीज** हुए भर्ती ● **1500 छोटे-बड़े ऑपरेशन** ● **16 हजार** पैथोलॉजी के सैंपल की जांच ● **09 हजार** से अधिक रेडियोलॉजी परीक्षण

इस वर्ष अब तक 2500 लोगों का नि:शुल्क ऑपरेशन

ग्लोबल हॉस्पिटल की ओर से वर्ष 1997 से सिरोही जिले, पाली, जालौर और उदयपुर सहित अन्य जिलों में कैंप लगाकर लोगों की नि:शुल्क जांच की जाती है। इस वर्ष अब तक 20 हजार लोगों की जांच की गई, जिनमें 2500 चयनित मरीजों का अस्पताल में मोतियाबिंद का नि:शुल्क ऑपरेशन किया गया है। इसमें फिलिथ्रोपिस्ट, लायंस क्लब और सहायता आयु भारत, भारत सरकार का सहयोग भी प्राप्त होता है। विद्यार्थियों की आंखों की नि:शुल्क जांच कर उन्हें चश्में वितरित किए जाते हैं। इस वर्ष 10 हजार से अधिक विद्यार्थियों की जांच की गई है।

हॉस्पिटल द्वारा ये सेवाएं भी जारी...

- क्षय रोग परियोजना की शुरुआत वर्ष 2008 से की गई है। इसके तहत क्षय रोगियों को चिंह्नित कर उनका परीक्षण किया जाता है। साथ ही जो पीड़ित पाए जाते हैं उनका इलाज किया जाता है।
- वर्ष 1991 से ग्राम आउटरीच प्रोग्राम शुरू किया गया। इसके तहत गांव-गांव जाकर लोगों को स्वास्थ्य सलाह दी जाती है। इसके लिए 21 गांवों को गोद लिया है। प्रतिवर्ष 15 से अधिक लोगों का इलाज किया जाता है।
- वर्ष 1995 से शुरू की गई पोषण परियोजना के तहत 16 प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों को रोजाना एक नाटक दिखाया जाता है। साथ ही दो हजार बच्चों को फल और दूध वितरित किया जाता है।
- वर्ष 2007 से स्माइल ट्रेन परियोजना के तहत गरीब परिवारों के बच्चों का कटे-फटे होंठ, तालू की नि:शुल्क सर्जरी की जाती है। प्रतिवर्ष ऐसे 300 बच्चों को चिंह्नित किया जाता है।
- वर्ष 2008 से ऐसे बच्चे जो बाल शोषण का शिकार हैं उन्हें ढूंढकर उनका इलाज और काउंसलिंग की जाती है। ऐसे 500 बच्चों का प्रतिवर्ष इलाज किया जाता है।
- वर्ष 2009 में ब्लड बैंक की स्थापना हुई। जगह-जगह कैंपों में प्रतिवर्ष 5 हजार लोग ब्लड डोनेट करते हैं।
- मुंबई में बने हॉस्पिटल द्वारा वैल्यूज इन हेल्थ केयर पर काम किया जा रहा है। इसके तहत मेडिकल फील्ड से जुड़े लोगों को स्प्रीचुअल रूप से सशक्त बनाया जाता है। मेडिकल कोर्सेस में भी वैल्यूज का सिलेबस शामिल किया जा रहा है। पांच हजार से ज्यादा लोगों के ऑपरेशन हो चुके हैं।
- आबू रोड स्थित ट्रॉमा सेंटर में आई हॉस्पिटल में इस वर्ष करीब पांच हजार आंखों की सर्जरी की गई है। यहां 200 किमी से मरीज आते हैं। इस वर्ष बच्चों की आंखों पर भी कार्य करने पर फर्स्ट प्राइज मिला है।

56 गांव में 24 हजार लोगों का नि:शुल्क इलाज

वर्ष 2004 से ग्लोबल हॉस्पिटल के डॉक्टर्स की एक टीम दिन-रात माउंट आबू के आसपास के 56 से अधिक गांवों में नि:शुल्क चिकित्सा के लिए तत्पर है। चलित एंबुलेंस अस्पताल के माध्यम से लोगों को घर जाकर इलाज किया जाता है। साथ ही जो मरीज गंभीर लोगों से पीड़ित पाए जाते हैं उनका इलाज अस्पताल में भर्ती कर किया जाता है। इससे प्रति वर्ष 24 हजार से अधिक लोगों को नि:शुल्क चिकित्सा का लाभ मिलता है।

ब्रह्माकुमारीज़ ने हर क्षेत्र में निभाया सामाजिक दायित्व

5 जून विश्व पर्यावरण दिवस

2012 में जी-न्यूज ने संस्था को दिया पर्यावरण पुरस्कार

2000 में कच्छ में आए भूकंप में लाखों लोगों की सहायता

2013 उत्तराखंड आपदा में लाखों की सहायता

2009 सुनामी में लाखों लोगों की सहायता

शिव आमंत्रण ➤ माउंट आबू

मनुष्य का सर्वांगीण विकास तभी होता है जब वह सभी क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति एवं भागीदारी सुनिश्चित करे। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान न केवल आध्यात्मिक संस्थान है, बल्कि संस्था के सिद्धांतों में पर्यावरण, भूकम्प, बाढ़ पीड़ितों, पर्यावरण, ऊर्जा संरक्षण से लेकर गरीबों को वस्त्र वितरित करना, सूखे के समय पानी वितरण एवं पशुओं को चारा उपलब्ध कराने की गतिविधियां प्रमुखता से शामिल हैं। साथ ही मेडिकल कैंप के जरिए लोगों को निःशुल्क दवा वितरण एवं इलाज, नशा मुक्ति अभियान चलाकर लोगों में जागृति पैदा करना प्रमुख लक्ष्य है। इसका एक ही मकसद है कि लोगों को प्रोत्साहित कर इन समस्याओं को जड़ से समाप्त कर दिया जाए ताकि वे पुनः कभी अपना सिर ना उठा सकें। तभी एक नवीन और समस्या मुक्त समाज की परिकल्पना का सपना साकार कर पाएंगे। प्रस्तुत है आपदा में संस्थान की गतिविधियों की रिपोर्ट....

पर्यावरण संरक्षण की पहल

'ग्रीन द अर्थ क्लीन द माइंड' प्रोजेक्ट से देशभर में रोपे गए लाखों पौधे

आज पूरे देश के साथ ही विश्व में पर्यावरण प्रदूषण एक भीषण समस्या बन गई है। इसके लिए संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने प्रारम्भ काल से ही पर्यावरण के प्रति जागृत रहने की शिक्षा दी थी। यही वजह है कि संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय समेत पूरे विश्व में पर्यावरण की रक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अभियान चलाकर पौधरोपण का विशाल कार्य संचालित किया जा रहा है। इसके लिए संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा 'ग्रीन द अर्थ क्लीन द माइंड' प्रोजेक्ट चलाया गया है। इसके तहत पूरे देश में स्कूली बच्चों के साथ मिलकर लाखों पौधे लगाए गए। इस कार्य के लिए जी न्यूज चैनल ने 2012 में संस्था को दिल्ली के एक समारोह में सराहना के साथ पर्यावरण पुरस्कार दिया था। इसके अलावा प्रतिवर्ष संस्था द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर जागरुकता कार्यक्रम, रैली, सभा, संगोष्ठी आयोजित किए जाते हैं।

समाज में आई हर परिस्थिति में बढ़ाए मदद के हाथ

बाढ़, भूकंप, सूखा जैसी आपदाओं में बढ़चढ़कर निभाई सामाजिक जिम्मेदारी

गरीब लोगों के लिए कंबल वितरण

संस्थान समय प्रति समय गरीब एवं असहाय लोगों के लिए कंबल सहित अन्य गर्म कपड़े वितरित करती है। सर्दी के दिनों में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में आस-पास के गांवों में कंबल एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं का योगदान दिया जाता है। ताकि लोग इसका सदुपयोग कर जीवन में तरक्की कर सकें। इसके साथ उन्हें श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए भी प्रेरित किया जाता है, ताकि वे एक सुन्दर जीवन व्यतीत कर सकें। खासकर आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं एवं बच्चों में नशे से मुक्ति के लिए जागृत किया जाता है। संस्था के प्रयासों से हजारों लोगों का जीवन बदल गया है। कई लोगों को जीवन में नई दिशा मिली है। शिविरों का भी आयोजन किया जाता है।

ऊर्जा संरक्षण... सौर ऊर्जा संयंत्र से 18-20 हजार यूनिट बिजली उत्पादन का लक्ष्य

ऊर्जा संरक्षण की ओर कदम बढ़ाते हुए और ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए संस्थान ने बिजली उत्पादन का सौर ऊर्जा संयंत्र लगाया है, जिसे इंडिया वन सोलर थर्मल पावर प्रोजेक्ट नाम दिया गया है। इससे वर्तमान में 12-15 हजार यूनिट (किलोवॉट) प्रतिदिन बिजली का उत्पादन हो रहा है। हालांकि यह उत्पादन बारिश व सर्दी में सूरज के नहीं निकलने पर प्रभावित भी होता है। आने वाले समय में इसे प्रतिदिन 18-20 हजार यूनिट (किलोवॉट) करने का लक्ष्य है। इसे लेकर तैयारी जारी है। सौर ऊर्जा संयंत्र से हर माह जहां लाखों रुपए की बिजली की बचत होने लगी है, वहीं एक दिन में करीब 30 हजार तक लोगों का भोजन सौर ऊर्जा से बन रहा है और नहाने के लिए गर्म पानी हो रहा है।

भूकम्प- बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए बढ़े हाथ

संस्थान प्रारंभ से ही प्राकृतिक आपदाओं के समय खुलकर लोगों के साथ खड़ा रहा है। सन् 2000 में जब गुजरात के कच्छ-भुज में भीषण भूकंप की त्रासदी हुई थी, तब तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के निर्देशन में कई ट्रक खाद्य सामग्री, कपड़े, दवाइयां आदि का वितरण किया गया। यहां कई सदस्यों का दल लंबे समय तक रहकर सेवाएं देता रहा। इसके अलावा जानकी फाउंडेशन से कई गांवों को गोद लेकर फिर से बसाया गया। वहीं दक्षिण भारत में आई सुनामी, बिहार में पानी के कहर से बर्बाद हुए सैकड़ों गांव के लोगों की मदद के लिए भी स्थानीय तथा अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू से लोगों की जरूरत की चीजें, कपड़ा आदि उपलब्ध कराए गए। इसी तरह उत्तराखंड में आई आपदा के समय भी संस्था के भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर पीड़ितों की सहायता की। राजस्थान में आई बाढ़ के समय भी हजारों लोगों के भोजन, कपड़ों की व्यवस्था संस्था द्वारा की गई। कर्नाकिट में आई भीषण बाढ़ में आपदा पीड़ित लोगों की हर संभव मदद की गई। इसके अलावा हर साल देश के अलग-अलग स्थानों पर आने वाली आपदाओं के समय लोगों की मदद के लिए हाथ बढ़ाए जाते हैं।

आपदा के समय जरूरतमंदों को कंबल का वितरण करती संस्थान की दादियां व वरिष्ठ भाई-बहनें।

टैंकरों से पानी वितरण... सूखे कंठों को करते हैं तर

सूखे के समय राजस्थान के गांवों में संस्थान द्वारा टैंकरों से जल वितरण किया जाता है।

संस्थान का अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू में स्थित है। चूंकि राजस्थान में गर्मी के मौसम में हर साल गांवों में पानी का भीषण संकट खड़ा हो जाता है। ऐसे में संस्थान द्वारा टैंकर के माध्यम से संकटग्रस्त लोगों को जल वितरण किया जाता है। साथ ही इस क्षेत्र में होने वाले बड़े समारोहो में पानी की व्यवस्था की जिम्मेदारी संस्था बखूबी निर्वहन करती रही है। इस योगदान के लिए मुख्यमंत्रियों से प्रशस्ति-पत्र एवं सराहना मिलती रही है। इसके अलावा कई बार राजस्थान में सूखे की स्थिति में राज्य सरकार ने भी चारा एवं पानी वितरण की व्यवस्था संस्थान को दी है, जिसे बखूबी निभाया गया है।

पर्यावरण संरक्षण के तहत पौधरोपण करते हुए संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, शांतिवन के मुख्य इंजीनियर बीके भरत भाई व अन्य।

रियल लाइफ

बाबा कहते थे मैं स्वयं ईश्वरीय बंधन में हूं

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

रियल लाइफ कॉलम में हम आपको प्रत्येक अंक में बताएंगे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मार्ग में क्या बाधाएं आईं और उनका सामना ब्रह्मा बाबा ने कितनी सरलता से किया.... जीवन को पलटने वाली अद्‌भुत जीवन कहानी पुस्तक से क्रमशः

> पिछले अंक में आपने जाना था कि इतिहास में जो भी धर्म स्थापक हुए हैं शुरुआत में सभी को विरोध का सामना करना पढ़ा था। अंत में उन्हें ने आत्म ग्लानि महसूस की और समर्थन किया।

लोग एक ही मार्ग पर सदा चलना चाहते हैं। यदि कोई दूसरा व्यक्ति परिश्रम से कोई अन्य छोटा और अच्छा मार्ग बनाकर उन्हें अपने अनुभव के आधार पर उस मार्ग पर सुगमतापूर्वक यात्रा करने के लिए प्रेरित करे तो भी लोगों को संकोच होता है। इसलिए ही समाज को मोड़ने के लिए सुधारकों को काफी विरोध और कष्ट सहन करने पड़ते हैं। कड़ी आलोचना तथा आरोपों के लिए भी तैयार रहना पड़ता है।

तीसरी बात यह है कि जनता की स्मरण-शक्ति इतनी कमजोर है कि वह किसी द्वारा की गई भलाई को, उसके अच्छे कार्य को, उस द्वारा किए गए उपकार को शीघ्र ही भूल जाया करती है और उसे दूसरे की पलकों में तिनका भी शहतीर की तरह दिखाई देने लगता है और वह वाक्-पटु, स्वार्थी, पुराने-पंथी लोगों का जल्दी साथ दे दिया करती है अथवा उन्हें अपना साथी बना लिया करती है।

बस, ठीक बात 'ओम मंडली तथा बाबा के साथ हुई। लोगों ने यह जानने की कोशिश ही नहीं की कि दादा, जो कि स्वयं एक गृहस्थ और व्यापारी थे, उन्होंने स्वयं किससे पवित्रता अथवा संपूर्ण ब्रह्मचर्य का यह पाठ पढ़ा और दादाजी को जो दिव्य साक्षात्कार हुए, वे साक्षात्कार कराने वाली शक्ति कौन सी थी? जो माताएं पहले घर में घूंघट ओढ़े चार दीवारी में, पिंजरे के पंछी की तरह कैद रहती थीं और बेजुबान थीं, उन्हें उच्च ज्ञान का कथन करना किसने सिखा दिया था? उन्हें इतना आत्मिक बल किसने दिया था। दादा को कलियुगी सृष्टि के महाविनाश और सतयुगी श्रीकृष्ण की सृष्टि के जो दिव्य साक्षात्कार हुए थे, उनका संपूर्ण उल्लेख क्या था और उस पूर्व-दृष्टि, भविष्य दर्शन के अनुसार अब व्यक्ति का तथा समाज का क्या कर्त्तव्य था? लोगों को तो चर्म-चक्षुओं से साधारण-सा मनुष्य दादा लेखराज ही दिखाई देता था। दादाजी के तन में प्रवेश करके ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाने वाले परमपिता परमात्मा शिव को तो वे देख ही नहीं सकते थे, क्योंकि प्रभु का दिव्य अस्तित्व तो दिव्य दृष्टि से ही जाना जा सकता है। जबकि उन लोगों में दिव्य दृष्टि से ही जाना जा सकता है, जिसका उनमें अभाव था। अतः वे अपने संस्कारों, मंतव्यों तथा आदतों से मजबूर थे।

दूसरी ओर स्वयं दादा ईश्वरीय शक्ति के सामने मजबूर थे। ऐसी परिस्थिति में वे प्रायः सिंधी में एक मुहावरा कहते थे- “वाट वेन्दे बा भण फाथो”। इसका भाव यह था कि जैसे अपनी राह जाते हुए किसी ब्राह्मण को खाहमखाह किसी कार्य में कोई बांध ले, वैसे ही मेरे साथ हुआ है। दादा तो अपने गृहस्थ तथा व्यापार में व्यस्त रहते थे परन्तु परमपिता परमात्मा शिव ने ही उनमें दिव्य प्रवेश करके उनके मुख द्वारा पवित्र जीवन का पाठ पढ़ाया था। अतः दादा इन लोगों को दोषी नहीं मानते थे बल्कि कहते थे कि इन्हें परमपिता परमात्मा की पहचान नहीं है इसलिए ही ये लोग वैर विरोध करते हैं। ये लोग इस भ्रांति में हैं कि मैं यह कार्य करा रहा हूं। इन्हें यह तो मालूम ही नहीं है कि मैं स्वयं भी ईश्वरीय बंधन में हूं। परमात्मा का अपना तो कोई तन है नहीं, इसलिए जब वे मेरे तन में आकर इन्हीं के कल्याण के लिए इन्हें ब्रह्मचर्य व्रत की शिक्षा देते हैं तो ये अपने सामने मुझे देखकर मुझ पर ही गाली रूपी फूल चढ़ाते हैं। इनका दोष नहीं है क्योंकि इन्हें ऐसे ग्रंथ और शास्त्र पढ़ाए गए हैं जिनमें लिखा है कि 'ब्रह्मा, सरस्वती पर मोहित हो गया', शंकर, मोहिनी को देखकर कामातुर हो गया', श्रीकृष्ण ने गोपिकाओं के चीर हरण किए आदि-आदि और ऐसे- कथानक सुन, इन्होंने मान लिया है कि संसार में यह काम विकार की रीति-रस्म तो सदा से चली आई है। काम महाशत्रु हैः यह पाठ अब वे बिल्कुल भूल चुके हैं। बाबा यह भी कहा करते थे कि 'निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो होए।

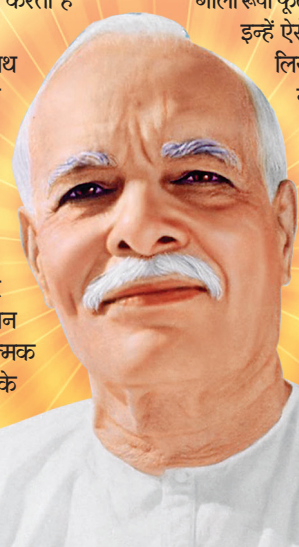

क्रमशः

समाज की निःस्वार्थ सेवा में समर्पित समाज 'सेवा प्रभाग'

वर्ष 1985 से भारतभर में जरूरतमंदों की कर रहे मदद

शिव आमंत्रण » आबू रोड

गरीब, असहायों और जरूरतमंदों की निःस्वार्थ भाव से सहायता, मदद और उन्हें बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा देने के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थान की भगिनी संस्था राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के तहत वर्ष 1985 में समाज सेवा प्रभाग की स्थापना की गई। तब से लेकर यह प्रभाग सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से समाज के चहुमुखी विकास के लिए सेवा में समर्पित है।

प्रभाग द्वारा समय-समय पर ब्रह्माकुमारीज़ के देशभर में स्थित सेवाकेंद्रों के माध्यम से रक्तदान शिविर, तनावमुक्ति शिविर, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, जरूरतमंदों को कंबल वितरण, अस्पतालों में फल वितरण, अनाथाश्राम-वृद्धाश्रम आदि में आयोजन और असहायों की सहायता आदि समाजसेवा से जुड़ी सेवाएं की जाती हैं। इससे अब तक लाखों लोगों को लाभ मिला है। साथ ही नशे की गिरफ्त में फंसे युवाओं को मोटिवेट कर उन्हें नशा छुड़ाया जाता है। प्रभाग की स्थापना के प्रारंभ में इसकी अध्यक्ष राजयोगी दादी चंद्रमणी रहीं। उनके अव्यक्त होने के बाद महाराष्ट्र जोन की जोनल निदेशिका राजयोगिनी बीके संतोष दीदी को प्रभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। वहीं पंजाब जोन के जोनल डायरेक्टर बीके अमीरचंद भाई को उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। इसके राष्ट्रीय संयोजक कर्नाटक गुलबर्गा के क्षेत्रीय निदेशक बीके प्रेम भाई हैं।

माउंट आबू में प्रभाग की ओर से सम्मेलन, कॉन्फ्रेंस और सेमीनार आदि के लिए बीके अवतार भाई को-ऑर्डिनेटर के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। साल में दो बार राष्ट्रीय सम्मेलन ज्ञान सरोवर और शांतिवन में आयोजित किया जाता है। प्रभाग द्वारा भारतभर में प्रशिक्षण, सभा, गोष्ठी, वर्कशॉप के माध्यम से लोगों को सामाजिक कार्य करने और समाज के पिछड़े वर्ग और जरूरतमंदों की आर्थिक व मानसिक रूप से सहायता करने के लिए प्रेरित और जागरूक किया जाता है। इन सेवाओं के माध्यम से आज लाखों लोगों को लाभ मिला है।

देशभर में निकाले गए राष्ट्रीय अभियान....

- दिल्ली से चंडीगढ़: समाज सेवा में अध्यात्म
- मुंबई से नागपुर: श्रेष्ठ समाज के लिए अध्यात्म
- ग्वालियर से भोपाल: आध्यात्मिकता द्वारा श्रेष्ठ समाज
- नडियाद से सूरत: सामाजिक मूल्य
- मंदसौर से जबलपुर: स्वच्छ समाज, स्वस्थ समाज

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

राजयोग से गंभीर बीमारी का भी इलाज संभव...

यदि हम इस सृष्टि के नियमों का पालन करें तो स्वस्थ रहने में खुशी का अनुभव होता है। योगबल हमें सचमुच स्वस्थ रखता है। इसके दो सुंदर अनुभव बताना बताता हूं.... पहला पूना से सुद्रीक कुमार नामक युवक के किडनी में 5 एमएम का स्टोन था। उसने सोचा मैं इसका कोई इलाज नहीं कराऊंगा और योग के अभ्यास से इसे ठीक करुंगा। उसने रोज पानी को जार्च करके (परमात्मा के शक्तिशाली बायब्रेशन देकर) पीया और अपनी किडनी को हाथ फेरकर मास्टर सर्वशक्तिमान का अभ्यास करके रोज शक्ति दी। कुछ ही दिन के इस योगाभ्यास से चमत्कार हुआ और ये स्टोन यूनिर के रूप में बाहर निकल गया। जब डॉक्टर्स से चेकअप कराया तो कोई स्टोन नहीं था।

दूसरा अनुभव एक सोनी परिवार का है। एक विदेश के बच्चों ने ई-मेल करके समस्या बताई कि हमारे पापा को ब्लैडर कैंसर हो गया था। इलाज में ज्याता खर्च देख और इस भयंकर बीमारी को देख इन्होंने इस पर योग के प्रयोग किया। इन बच्चों ने भी राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से परमात्मा की शक्ति लेकर पापा को हुए इस ब्लैडर कैंसर को शक्ति देना प्रांरम्भ किया। पानी चार्ज करके पिलाया। दोनों बच्चों (16 और 18 वर्षीय) ने अपने पापा के लिए रोज एक घंटा योग किया। 6 माह बाद जब फिर से चेकअप कराया तो कैंसर का नाम निशान नहीं था। यह देख डॉक्टर भी आश्चर्यचकित रह गए। यहां सबसे बड़ी बात सामने आती है परमात्मा पर निश्चय और विश्वास की। यदि आपका परमपिता शिव परमात्मा (शिव बाबा) पर पूरा निश्चय है तो निश्चित है आपको हर कदम पर उनकी मदद महसूस होगी। कई लोग ऐसे भी हैं जो योग करते हैं परंतु उनका रोग खत्म नहीं होता है, ऐसे में उनका विश्वास और भावना डावाडोल हो जाती है। अगर परमात्म सहयोग आ रहा भी होगा तो उसे ग्रहण कर नहीं पाते हैं। इसलिए विश्वास रखना जरूरी है।

तीन चीजें महत्वपूर्ण हैं: पानी चार्ज करके पीना। ब्रेन को या उस अंग को शक्ति देना और एक घंटा बहुत अच्छा योग अभ्यास करना। साथ ही रात को सोने से पहले एक विजन बनाएं और अपने अंतर्मन को कह दे कि मैं इस बीमारी से मुक्त हूं। आयुर्वेद के मुताबिक हमारे शरीर में वात-पित्त और कफ का संतुलन जरूरी है। इनका संतुलन बिगड़ने पर ही शरीर में रोग पैदा होते हैं। अपने अंतर्मन में ये बात बिठा लें कि मैं आत्मा हूं और ये मेरा देह है। ये देह नश्वर है। मैं आत्मा इसकी मालिक हूं। मैं आत्मा प्रकृति की भी मालिक हूं। ये जो चारों ओर संपूर्ण प्रकृति है, इसका निर्माण हमारे लिए हुआ है। हमारे उपयोग के लिए हुआ है। यदि हमारे बाइब्रेशन बहुत अच्छे हैं तो प्रकृति सतोप्रधान है। मनुष्य के बायब्रेशन बहुत गंदे खराब हैं तो प्रकृति भी तमोप्रधान है। राजयोग में प्रत्येक समस्या का समाधान छुपा है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता का महत्व का प्रसारण जल्द

बीके हरीलाल
कार्यकारी निदेशक
गॉडलीवुड स्टूडियो

ईश्वर का समस्त मानव जाति के आध्यात्मिक उत्थान के लिए दिया हुआ उपहार गॉडलीवुड स्टूडियो नित नए सोपान गढ़ रहा है। यह पहला अवसर होगा जब टेलीविजन के इतिहास में पीस ऑफ माइंड, ओम शांति चैनल समेत देश कई चैनलों पर भी गॉडलीवुड स्टूडियो द्वारा प्रसारित किया जाएगा। वास्तव में गीता की प्रासंगिकता मनुष्य के जीवन में बहुत गहरी छाप छोड़ती है। मनुष्य के उत्थान तथा पतन दोनों का ही आध्यात्मिक वर्णन है। गॉडलीवुड स्टूडियो द्वारा वर्तमान की समस्याओं का आध्यात्मिक और ईश्वरीय ज्ञान द्वारा कैसे समाधान करें, इस पर बहुत उपयोगी और सुंदर ढंग से प्रस्तुति दी गई है। जो जून से पीस ऑफ माइंड, ओम शांति समेत कई चैनलों में प्रसारण शुरू होगा। यह अपने आप में एक अद्वितीय है। जिससे आप और हम घर बैठे इसका लाभ ले सकते हैं।

डिजिटल शिक्षा से हजारों लोगों को मिली 'जीने की राह'

- डिजिटल माध्यम टीवी, रेडियो, वेब से भी दे रहे मूल्यनिष्ठ शिक्षा
- भारत का एकमात्र विज्ञापन रहित चैनल 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

शिव आमंत्रण » आबू रोड

ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा शुरू किया गया पीस ऑफ माइंड चैनल समाज के लिए एक वरदान साबित हुआ है तो शांतिवन परिसर में बना गॉडलीवुड स्टूडियो आध्यात्म जगत में नित नए आयाम गढ़ रहा है। यहां तैयार हो रही न्यूज, प्रोग्राम, सीरियल, टॉक-शो, मंथन, समस्या समाधान, दिशा आदि कार्यक्रम समाज को मूल्यनिष्ठ बनाने के साथ दिशा बोध भी कर रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से हजारों लोगों के जीवन में फिर से खुशहाली और आनंद आया है। ये सभी यहां की सभी सेवाएं निःशुल्क मानव कल्याण के लिए की जा रही हैं। पीस ऑफ माइंड विश्व का एकमात्र ऐसा चैनल है जिसमें किसी तरह का कोई विज्ञापन प्रसारित नहीं किया जाता है। गॉडलीवुड स्टूडियो द्वारा मूल्यनिष्ठ शिक्षा को लेकर पिछले 6 साल में 10 हजार एपीसोड तैयार किए जा चुके हैं। फिलहाल मुंबई में 40 लोगों की टीम द्वारा थ्रीडी फिल्म द लाइट का निर्माण किया जा रहा है। इसमें संस्थान के संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा की जीवनी के साथ इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का पूरा इतिहास दिखाया जाएगा। स्टूडियो द्वारा इस वर्ष ओम शान्ति चैनल की शुरुआत की गई है।

रेडियो मधुबन

रेडियो मधुबन अपनी स्थापना के चौथे साल में प्रवेश कर रहा है। पूना, संगारेडी, सिदेरी में तीन नए रेडियो भी शुरू किए गए हैं। वेब रेडियो चलाए जा रहे हैं। इसमें टेलेंट हंट के माध्यम से बच्चों की प्रतिभा को निखारा जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर ब्रह्माकुमारी...

- ब्रह्माकुमारी ने भारत के प्राचीन राजयोग का संदेश भारत ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर भी पहुंचाया है। आज हमारे विश्व के 140 देशों में नागरिक मेडिटेशन का अभ्यास कर रहे हैं।
- ब्राजील में हजारों लोग ऑनलाइन राजयोग मेडिटेशन का कोर्स कर रहे हैं। कई लोगों का डिप्रेशन मेडिटेशन से दूर हुआ है और उनके जीवन में सुख-शांति आई है।
- नैरोबी में बनाए गए ग्लोबल यूजियम में खासकर यूथ को साइलेंस और पीस को लेकर कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।
- नाइजीरिया में मोबाइल बैन के जरिए लोगों को राजयोग मेडिटेशन के लाभ बताए जा रहे हैं।
- आबू रोड में बने सोलार वन प्रोजेक्ट के बारे में जर्मनी के लोगों को बस द्वारा जानकारी दी गई।
- लंदन ग्लोबल रिट्रीट सेन्टर में हजारों लोग आकर सुख-शांति और आनंद की अनुभूति करके जाते हैं।
- मलेशिया रिट्रीट सेन्टर में प्रधानमंत्री की तरफ से मूल्य शिक्षा के लिए ग्रान्ट मिला है। दो स्कूलों में बच्चों को मूल्य शिक्षा दी जा रही है।
- फिलीपीन में स्थित रिट्रीट सेंटर में साइलेन्स रिट्रीट के तहत सुबह 45 मिनट का एक लेक्चर रखा जाता है। इससे रोजाना सैकड़ों लोग शांति की अनुभूति करके जाते हैं।
- जापान में पीस ग्रुप इंडियन ए बेसी के माध्यम से इन्टरनेशनल योगा डे हर साल मनाया जाता है।
- रशिया सरकार की महिला शाखा ने ब्रह्माकुमारी संगठन को एडवाइजरी नियुक्त किया है।
- वर्ष 2014 में शुरू किए गए सात अरब सत्कर्मों की महायोजना प्रोजेक्ट से अब तक 12 हजार से ज्यादा कार्यक्रम हुए हैं। 2018 को 'इयर ऑफ गुडनेस' के रूप में मनाया जा रहा है।

फ्यूचर ऑफ पॉवर

अफ्रीका के प्रसिद्ध उद्योगपति और 51 अंतरराष्ट्रीय कंपनीज के डायरेक्टर निजार जुमा को जब भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा मिली तो उन्होंने इसे विश्व के कोने-कोने में पहुंचाने का बीड़ा उठाया है। उद्योगपति जुमा की दिनचर्या में आध्यात्म ज्ञान रच-बस गया है। वह ब्रह्माकुमारीज के सहयोग से 66 शहरों में प्रोग्राम कर चुके हैं। 9 कार्यक्रम पूरे विश्व में तथा 57 कार्यक्रम भारत में हुए हैं। अभी एक नया ब्लू कंपनी प्रोजेक्ट शुरू किया है। बिना ब्राइबरी और करप्शन के कैसे कंपनी चला सकते हैं। यह प्रोजेक्ट अफ्रीका में शुरू किया है, इसमें 220 कंपनी ने हमें ज्वॉइन किया है। 1000 कंपनी ज्वॉइन करने के बाद भारत में शुरू करेंगे।

ब्रह्माकुमारी संस्थान के भारत वर्ष में स्थित विभिन्न जोनल हैडक्वार्टर के माध्यम से वर्ष 2018-19 में ये कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे

राजस्थान
- 15 प्रदेशस्तरीय सम्मेलन एवं अभियान
- जल स्वाबलंबन पर विशेष फोकस
- स्वच्छता एवं व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम
- बेटी गौरव उद्यान विकसित करने की योजना
- ग्राम विकास के लिए विशेष आयोजन

दिल्ली
- दिल्ली में सद्भावना पूर्ण माहौल के लिए 35 विशाल अंतरराष्ट्रीय योग कार्यक्रम, सामूहिक राजयोगाभ्यास
- विभिन्न विभागों, स्कूलों, कॉलेजों और मंत्रालयों में मूल्यनिष्ठ आयोजन

पंजाब/हरियाणा/जम्मू एवं कश्मीर व हिमाचल प्रदेश
- चारों ही प्रदेशों में समाजोत्थान की रूपरेखा
- 150 से ज्यादा अभियान, प्रदेश स्तरीय सेमिनार, अभियान, कार्यशाला
- ग्राम विकास तथा नशामुक्ति, बेटी बचाओ का विशेष प्रशिक्षण एवं अभियान

महाराष्ट्र
- 200 से ज्यादा गांवों से शहरों तक नशामुक्ति, ग्राम विकास, पर्यावरण, ऊर्जा संवर्धन, महिला तथा युवाओं के लिए सेमिनार, अभियान और सम्मेलन का आयोजन

मध्यप्रदेश
- 157 प्रदेश में किसानों के सशक्तिकरण के लिए अभियान
- तंबाकू मुक्ति अभियान
- युवाओं के लिए विशेष कार्यक्रम
- भोपाल, इंदौर से इन योजनाओं का शुभारंभ किया जाएगा

उत्तरप्रदेश
- इलाहाबाद कुंभ मेले में देंगे आध्यात्मिक संदेश
- 100 कार्यक्रमों के जरिए पूरे प्रदेश में पर्यावरण संरक्षण, अलविदा डायबिटीज, महिला सशक्तिकरण, सर्वधर्म सम्मेलन, ग्राम विकास, विश्व जल दिवस, विश्व पर्यावरण, विश्व विकलांग दिवस पर आयोजन
- बनारस क्षेत्र में प्रधानमंत्री के लोकसभा क्षेत्र में उनकी योजनाओं को अमलीजामा पहनाने के लिए संस्थान का विशेष प्रयास

पश्चिम बंगाल/सिलीगुड़ी/गंगटोक/सिक्किम
- 151 कार्यक्रम होंगे
- बाल स्वास्थ्य एवं कुपोषण मुक्त भारत अभियान
- ग्राम विकास, बेटी बचाओ, सशक्त बनाओ अभियान, कार्यक्रम
- युवा जागृति से स्वर्णिम भारत और हरा भरा-स्वच्छ और स्वस्थ भारत अभियान
- पारंपरिक यौगिक खेती एवं किसान सशक्तिकरण
- सुरक्षित यातायात यात्राएं एवं सशक्त भारत अभियान
- समाज सेवा प्रभाग का कार्यक्रम

बिहार
- 31 आयोजन पूरे जोन में
- माइ इंडिया, हैल्दी इंडिया कैंपेन
- हर सप्ताह ग्राम प्रदूषण मुक्त कार्यक्रम
- हमारा बिहार व्यसन मुक्त व स्वच्छ एवं स्वस्थ बिहार कार्यक्रम।
- दशहरा के उपलक्ष्य में झांकी एवं शिविर

जमशेदपुर (झारखंड)
- ग्राम विकास प्रभाग द्वारा किसान सशक्तिकरण अभियान
- एज्युकेशन विंग की कॉन्फ्रेंस
- सैट विंग की ट्रेनिंग एवं नवंबर में कार्यक्रम।
- अक्टूबर में मेडिकल विंग का सम्मेलन
- शाश्वत यौगिक खेती एवं ग्राम विकास अभियान
- युवा प्रभाग की ओर से मेरा भारत, स्वर्णिम भारत अभियान
- वैश्विक ज्ञानोदय द्वारा स्वर्णिम युग कार्यक्रम

उड़ीसा
- 25 मुख्य कार्यक्रम होंगे
- ग्राम विकास सम्मेलन एवं सरपंच सम्मेलन
- युवा अभियान 10 जिलों में
- व्यसन मुक्ति कार्यक्रम।
- मेरा भारत, स्वच्छ भारत अभियान
- बाल स्वास्थ्य एवं कुपोषण मुक्त भारत अभियान

असम/मणिपुर/अरुणाचल
- 25 विशाल कार्यक्रम और अभियान
- मेडिकल विंग, आर्ट कल्चरल विंग के कार्यक्रम
- अलविदा तनाव एवं सिक्योरिटी विंग के कार्यक्रम

अगरतला (त्रिपुरा)
- 16 नर्सेस, युवाओं समेत कृषि विकास के लिए आयोजन

गुजरात
- 115 से ज्यादा अभियान और सम्मेलन
- सभी प्रभागों के आयोजन, बच्चों और महिलाओं पर विशेष फोकस
- गांवों से लेकर शहरों तक अभियान

कर्नाटक
- 115 से ज्यादा आयोजन सभी वर्गों के लिए

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

ब्रह्माकुमारीज़ एक विश्वव्यापी संगठन है जहां आध्यात्मिक ज्ञान के साथ साइंस और तकनीक का अद्भुत संयोजन देखने को मिलता है। प्रत्येक अंक में आप वंडर्स ऑफ ब्रह्माकुमारीज़ में जानेंगे रोचक और अद्भुत पहलु। इस बार हम आपको बता रहे हैं संस्थान के शांतिवन में बने विशाल किचन के बारे में....

सौर ऊर्जा से डेढ़ घंटे में तैयार हो जाता है 40 हजार लोगों का भोजन

ब्रह्माकुमारी संस्थान के शांतिवन परिसर में स्थित शिव भोलानाथ का भंडारा की गिनती भारत के हाईटेक किचन में होती है। इसकी विशेषता यह है कि यहां मात्र डेढ़ घंटे में सौर ऊर्जा सिस्टम से बने किचन में 40 हजार लोगों का भोजन तैयार हो जाता है। किचन को बनाने में जर्मनी की हाईटेक तकनीक का उपयोग किया गया है। यहां भोजन पकाने के लिए 100 से 300 डिग्री तक तापमान की व्यवस्था है ताकि इसे बनाने में कम समय लगे। किचन में स्थित विशेष तरह की कड़ाई जो कि ऑइल रोटिंग हीटिंग सिस्टम पर बनी है जिसके नीचे तल में ऑइल भरा होता है जिसे गर्म करने पर उसकी गर्मी से भोजन पक जाता है। इसके अलावा रोटी बनाने के लिए विशेष मशीन मंगाई गई है। एक मशीन से एक घंटे में दो हजार रोटी आसानी से बन जाती हैं। साथ ही इस किचन की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहां साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। सौर ऊर्जा से खाना बनाने पर समय-समय पर सरकार की ओर से इस प्रयास की सराहना भी की गई है। एक कढ़ाई में ही सात हजार लोगों के लिए सब्जी पकाई जा सकती है। इस तरह संस्थान में स्थित ये किचन सौर ऊर्जा संरक्षण का बेहतर नमूना है, जिससे सीख ली जा सकती है।

1994 में प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की स्मृति में डाक टिकट जारी

ब्रह्माकुमारी संस्थान का अपनी स्थापना के समय से उद्देश्य स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन रहा है। यही कारण है कि इससे जुड़ने वाला हर व्यक्ति पहले स्वयं के अंदर मूल्यों की धारणा करता है उसके बाद वह दूसरों के लिए जीवन में मूल्य और आध्यात्मिकता अपनाने पर जोर देता है। इस संस्थान की स्थापना वर्ष 1937 में सिंध (अब पाकिस्तान में) के हीरे-जवाहरात के प्रसिद्ध व्यापारी दादा लेखराज ने की थी। बाद में परमात्मा द्वारा उन्हें प्रजापिता ब्रह्मा नाम दिया गया। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने खुद संस्था की स्थापना करने के बाद इसकी पहली मुख्य प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) को बनाया। साथ ही शुरू से ही महिलाओं को आगे बढ़ाया और इसकी बागडोर नारी शक्ति के हाथों में सौंपी। भारत की प्राचीन संस्कृति आध्यात्मिकता एवं राजयोग मेडिटेशन के विश्वभर में प्रचार-प्रसार करने पर भारत सरकार ने सम्मान स्वरूप स्मृति में प्रजापिता ब्रह्मा के नाम से डाक टिकट जारी किया। वर्ष 1994 में ये डाक टिकट जारी किया गया जो संस्था के लिए एक गौरवशाली क्षण था।

अगले अंक में आप जानेंगे संस्था की अन्य उपलब्धियों के बारे में... पढ़ते रहिए शिव आमंत्रण।

स्प्रीचुअल लीडर्सः ब्रह्माकुमारीज़ प्रबंधन कमेटी...

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका

दादी हृदयमोहिनी
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका

दादी रतनमोहिनी
संयुक्त मुख्य प्रशासिका

ईशु दादी
संयुक्त मुख्य प्रशासिका

बीके निर्वैर
महासचिव

बीके बृजमोहन
अतिरिक्त महासचिव

बीके करुणा
अध्यक्ष, मीडिया विंग

बीके मुन्नी
जनरल मैनेजर

बीके आत्मप्रकाश
उपाध्यक्ष, मीडिया विंग

बीके संतोष
जोन इंचार्ज, महाराष्ट्र जोन

बीके अमीरचंद
जोनल निदेशक, पंजाब जोन

डॉ. बीके निर्मला
निदेशक, ज्ञान सरोवर माउंट आबू

बीके सरला
जोन इंचार्ज, गुजरात जोन

बीके शशिप्रभा
उपाध्यक्ष, स्पोर्ट्स विंग

स्प्रीचुअल लीडर्सः ब्रह्माकुमारीज़ जोन-सबजोन और विंग्स के वरिष्ठ पदाधिकारी...

दादी कमलमणी
कृष्णानगर, दिल्ली

दादी रुक्मणी
राजौरी गार्डन, दिल्ली

बीके मृत्युंजय
माउंट आबू

बीके आशा
ओआरसी, गुरुग्राम

बीके अशोक गाबा
माउंट आबू

बीके मोहन सिंघल
माउंट आबू

बीके बसवराज
हुबली

बीके भूपाल
माउंट आबू

डॉ. बनारसीलाल
माउंट आबू

बीके प्रेम सिंह
गुलबर्गा

बीके शीलू
माउंट आबू

बीके नलिनी
घाटकोपर, मुंबई

बीके राज
काठमांडू, नेपाल

बीके ऊषा
माउंट आबू

बीके गीता
माउंट आबू

बीके चंद्रिका
अहमदाबाद

बीके योगिनी
विले पार्ले, मुंबई

बीके चक्रधारी
शक्तिनगर, दिल्ली

बीके शारदा
अहमदाबाद

बीके रानी
मुजफ्फरपुर

बीके भारती
राजकोट

बीके सत्यवती
तीनसुकिया, आसाम

बीके शुक्ला
हरिनगर, दिल्ली

डॉ. बीके सविता
माउंट आबू

बीके कमला
रायपुर

बीके सुरेन्द्र
वाराणसी

बीके गोदावरी
मुलुंद, मुंबई

बीके सुषमा
जयपुर

बीके दिव्याप्रभा
बोरीवली, मुंबई

बीके आरती
इंदौर

बीके सरला
महेसाणा, गुजरात

बीके मनोरमा
इलाहाबाद

बीके बीणा
अन्नानगर, चेन्नई

बीके सुनंदा
कोल्हापुर, महाराष्ट्र

बीके गीता
श्रीफोर्ट, दिल्ली

बीके शीला
गुवाहाटी

बीके लक्ष्मी
मैसूर, कर्नाटक

बीके अवधेश
भोपाल

बीके पुष्पा
करोलबाग, दिल्ली

बीके अंबिका
बैंगलुरु

बीके पद्मा
बैंगलुरु

बीके सरला
पानीपत

बीके मीरा
शांताक्रूज, मुंबई

बीके कमलेश
कटक, उड़ीसा

बीके गीता
नवसारी, गुजरात

बीके अंबिका
बेलगाम

बीके विद्या
सिविल लाइन, कानपुर

बीके हेमलता
इंदौर

बीके पूनम
राजापार्क, जयपुर

बीके राज
अमृतसर

डॉ. बीके निरुपमा
पुरी, उड़ीसा

बीके कानन
कोलकाता म्यूजियम

बीके उत्तरा
चंडीगढ़, पंजाब

बीके चंद्रिका
हिम्मतनगर, गुजरात

बीके दमयंती
जूनागढ़, गुजरात

बीके मंजू
ब्रह्मपुर, उड़ीसा

बीके मंजू
सिकंदराबाद

बीके विजया
गुलबर्गा, कर्नाटक

बीके मीनाक्षी
मीनाक्षी नगर, मदुरई

बीके कुलदीप
हैदराबाद

बीके शांता
अजमेर, राजस्थान

बीके सुषमा
जामनगर, गुजरात

बीके तृप्ति
भावनगर, गुजरात

बीके कुसुम
चंद्रपुर

बीके सुंदरी
मालवीयनगर, दिल्ली

बीके महादेवी
मेहबूब नगर

बीके मंगला
बुरहानपुर, मप्र

बीके पार्वती
संबलपुर

बीके परिणीता
पोखरा, नेपाल

बीके पारु
क्वार्टर गेट, पुणे

बीके पूर्णिमा
नडियाद, गुजरात

बीके मधु
बांगुर, कोलकाता

बीके मीनाक्षी
जलगांव, महाराष्ट्र

बीके नलिनी
मीरा सोसायटी, पुणे

बीके नीलम
नवरंगपुर, उड़ीसा

डॉ. बीके निरंजना
अलकापुरी, बड़ोदरा

बीके उर्मिला
जीपीओ, पुणे

बीके सोनप्रभा
सोलापुर, महाराष्ट्र

बीके पंकजम
कोट्यम, केरल

बीके रजनी
वसंतनगर, नागपुर

बीके रंजन
बलसाड, गुजरात

बीके सरला
रानीबाग, दिल्ली

बीके सरोजा
कुमारा पार्क, बैंगलुरु

बीके प्रभा
भरुच, गुजरात

बीके सरोज
कासगंज

बीके कमल
बीकानेर, राजस्थान

बीके राज
मंगलवाडी, बड़ोदरा

बीके सविता
बारंगल, आंध्रप्रदेश

बीके राज
जालंधर

बीके निर्मला
हुबली, कर्नाटक

बीके शीला
कमलानगर, आगरा

बीके किरण
काठमांडू, नेपाल

बीके शक्ति
राजौरी गार्डन, दिल्ली

बीके कविता
भरतपुर, राजस्थान

बीके प्रेमलता
फरीदकोट

विभिन्न विंग्स के पदाधिकारी व वरिष्ठ बीके भाई-बहनों की सूची पेज 15 पर

स्प्रीचुअल लीडर्स: ब्रह्माकुमारीज़ विंग्स के वरिष्ठ पदाधिकारी और भाई-बहनें...

डॉ. प्रताप मिड्ढा, माउंट आबू | बीके बीएल माहेश्वरी, जोधपुर | बीके राजू, माउंट आबू | डॉ. अशोक मेहता, मुंबई | बीके ललित, माउंट आबू | बीके सूरज, माउंट आबू | बीके मदनलाल, जयपुर | बीके शिवानी, गुरुग्राम | बीके सविता, नीमच, मप्र | बीके किरण, महू, मप्र | बीके शोभा, पणजी, गोवा | बीके ऊषा, फरीदाबाद

बीके अवतार, माउंट आबू | डॉ. गिरीश पटेल, माउंट आबू | बीके शांतनु, माउंट आबू | बीके हरिलाल, माउंट आबू | बीके भरत, माउंट आबू | बीके हरीश शुक्ला, अहमदाबाद | बीके आत्मप्रकाश, माउंट आबू | बीके सीता, अमरावती | बीके राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली | बीके ऊषा, उज्जैन, मप्र | बीके नीता, ईदगाह, भोपाल | बीके शैलजा, छतरपुर, मप्र

बीके हरीश, माउंट आबू | बीके रामनाथ, माउंट आबू | बीके कुंती, मलाड, मुंबई | बीके आस्पी, मुंबई | बीके सुशांत, दिल्ली | बीके सतीश, माउंट आबू | बीके लता, माउंट आबू | बीके रुक्मिणी, अकोला, महाराष्ट्र | बीके निर्मला, रीवा, मप्र | बीके मुत्तुमणी, अड्यार, चैन्नई | बीके शील, नोएडा | बीके राजकुमारी, लुधियाना, पंजाब

बीके जितेन्द्र सिंह, माउंट आबू | बीके सुरेश, माउंट आबू | बीके यशवंत, माउंट आबू | डॉ. बीके रश्मि, मुंबई | बीके सुमन, माउंट आबू | बीके कमलेश, मुंबई | बीके तृप्ति, सूरत, गुजरात | बीके माधुरी, खुर्शीद बाग, लखनऊ | बीके करुणा, इंदौर | बीके कलावती, चैन्नई | बीके राधा, गोमतीनगर,लखनऊ | बीके आशा, भिलाई, छग | बीके नीहा, गामदेवी, मुंबई

बीके दयाल, माउंट आबू | बीके कोमल, माउंट आबू | बीके श्रीकांत, माउंट आबू | बीके सुमंत, माउंट आबू | बीके जगबीर, माउंट आबू | बीके संजय, माउंट आबू | बीके श्रद्धा, माउंट आबू | बीके शिविका, माउंट आबू | बीके उमा, मदुरई, तमिलनाडू | बीके उमा, थिरुवन्नामलाई | बीके गीता, भीनमाल, राजस्थान | बीके माला, ब्रह्मपुर, उड़ीसा | बीके रुक्मिणी, माउंट आबू

रक्षाबंधन पर विशेष

परमात्म प्यार का आधार, पवित्रता की रक्षा का संकल्प

शिव आमंत्रण » आबू रोड

रक्षाबंधन का त्योहार श्रावण मास में मनाया जाता है। इस मास को मल-मास और पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं और सत्संग आदि करते हैं। यह प्रथा इसी रहस्य की ओर संकेत करती है कि जब सारी सृष्टि काम-क्रोधादि विकारों से मलीन हो गई थी अर्थात् जब कलियुग का अंतिम चरण था तब परमपिता परमात्मा अथवा पुरुषोत्तम प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हुए और उन्होंने ज्ञान वर्षा की। उन द्वारा ज्ञान सुनने वाले सच्चे एवं पवित्र ब्राह्मणों ने स्थान-स्थान पर सत्संग किए। तब उन्होंने लोगों को पवित्रता की रक्षा का बंधन बांधा।

अतः बांधना है तो ऐसा रक्षाबंधन बांधों कि जिससे स्वर्ग का स्वराज्य मिल जाए, जिससे प्रभु का प्यार प्राप्त हो, जिससे फिर कभी रक्षा की आवश्यकता ही न रहे और जिससे सभी कामनाएं पूर्ण हो जाएं। जिनसे पहले किसी का अपवित्रता युक्त नाता अथवा व्यवहार रहा है, वह एक-दूसरे की पवित्रता का बंधन बांधें! रक्षाबंधन के दिन वह यह व्रत धारण करें कि आज से हम पवित्रता के बंधन में बंध गए हैं। अब हमारा जीवन एक नया जीवन होगा। इसमें हम अपने मन, वचन और कर्म की पवित्रता की पूरी रक्षा करेंगे और दूसरे के साथ अपने लेन-देन पर तथा अपने कर्म खाते पर भी पूरा ध्यान रखेंगे ताकि उसमें किसी प्रकार की अपवित्रता न आए। इस प्रकार के रक्षाबंधन से ही यह देश फिर श्रेष्ठाचारी अथवा स्वर्ग बन सकता है। कहावत भी है कि इंद्र को इंद्राणी ने जब यह रक्षाबंधन बांधा था तो उसे स्वर्ग का दैवी स्वराज्य मिला था अथवा यमुना ने अपने भाई यम को जब यह बंधन बांधा था तो उसने यह वरदान दिया था कि इस दिन जो बहन-भाई रक्षाबंधन बांधेंगे वह यमलोक के दंडों से बच जाएंगे। स्पष्ट है कि ऐसा रक्षाबंधन जिससे की स्वर्ग का स्वराज्य प्राप्त हो अथवा मनुष्य यम के दंडों से बच जाए, पवित्रता का ही बंधन हो सकता है, अन्य कोई बंधन नहीं। परंतु आज बहुत से मनुष्य घबरा जाते हैं। वह सोचते हैं कि पवित्र बनना तो बहुत कठिन है। यह बंधन हम कैसे निभा सकेंगे? आज की दुनिया में अपने मन-वचन-कर्म की पवित्रता की रक्षा करना भला कहां संभव है? अभ्यास से वह अपने पांवों पर खड़ा भी हो जाता है और चलने भी लगता है और बड़ा होने पर भागता भी है। अतः आज जो कार्य अत्यंत कठिन लगता है, पुरुषार्थ करने से कल वही कार्य सहज एवं स्वाभाविक रीति होना संभव हो जाता है।

आत्म स्मृति की याद दिलाता ‘तिलक’

राखी बांधने के बाद बहनें अपने भाइयों के मस्तक पर तिलक लगाती है। परंतु इस रस्म के भावार्थ को आज सभी भूल चुके हैं कि वास्तव में मस्तक अथवा भृकुटि के मध्य मनुष्य शरीर का वह स्थान है जहां आत्मा निवास करती है। जब शिव शक्तियां मनुष्यों को अर्थ-सहित सच्चा रक्षाबंधन बांधती हैं तो वे उन्हें परमात्मा शिव द्वारा बताए हुए ईश्वरीय ज्ञान का यह रहस्य भी सुनाती है कि- “वास्तव में आप नश्वर शरीर नहीं किंतु अविनाशी आत्मा हो। आत्मा का असली स्वधर्म पवित्रता-आत्मा का असली स्वधर्म पवित्रता है। स्वयं को तथा दूसरों को आत्मा समझ कर कर्म करने से काम-महाशत्रु पर स्वतः ही विजय प्राप्त हो जाती है, क्योंकि काम विकार की उत्पत्ति का मूल कारण देह- अभिमान अर्थात् स्वयं को और दूसरों को शरीर समझना ही है।” तिलक लगाना मनुष्य को उसके आत्म-स्वरूप की याद दिलाने का प्रतीक है। वर्तमान समय परमात्मा शिव पुनः अवतरित हो चुके हैं और प्रजापिता ब्रह्माकुमारियों के द्वारा मनुष्यों को रक्षाबंधन के पवित्र सूत्र में बांधकर उन्हें निकट भविष्य में स्थापित होने वाली सतयुगी पावन सृष्टि में चलने के योग्य बना रहे हैं।

मन्सा-वाचा-कर्मणा को संपूर्ण पवित्र बनाने का लें संकल्प

यदि काल से, यमराज के दंडों से, रोग और शोक से हम सचमुच रक्षा चाहते हैं तो हमें चाहिए कि आज हम पुनः यह विचित्र बंधन बांधें। अर्थात हम मन्सा, वाचा, कर्मणा को पूर्ण पवित्र बनाने का व्रत लें। दूसरों को रक्षा बंधन बांधने अथवा उनसे बंधवाने की बजाय पहले तो हम स्वयं को इस बंधन में बांधें। यदि प्रभु से सच्चा प्यार है तो पवित्रता का बीड़ा उठाना चाहिए। रक्षाबंधन बंधवाना वीरों का काम है। परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मनुष्य तन में अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और इस प्रकार पवित्र सृष्टि की पुनः स्थापना का दिव्य कर्तव्य कर रहे हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम उस शिक्षा को प्राप्त करके पवित्र बनें। इस अपवित्र सृष्टि का तो विनाश अब निकट भविष्य में बमों और प्राकृतिक आपदाओं द्वारा वैसे भी होने वाला है और यह अपवित्रता, काम-वासना अन्य प्रकार की अशुद्धि छूटनी तो है ही, तो क्यों न इन कांटों और कंकरों को स्वतः ही छोड़कर हम परमपिता परमात्मा से ज्ञान रत्न और पवित्रता की सौगात ले लें। इस प्रकार ऐसा नया और विचित्र रक्षाबंधन बांधें जिससे कि भविष्य में 21 जन्मों के लिए दैवी स्वराज्य की प्राप्ति हो।

2018 तक

ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर

12 लाख लोग हुए नशामुक्त

शिव आमंत्रण ➤ आबू रोड

निरोगी काया संसार का सबसे बड़ा सुख है। यदि हमारा शरीर ही स्वस्थ नहीं तो दुनिया के तमाम वैभव, सुख-सुविधाएं और साधन व्यर्थ हैं। इसी को देखते हुए 1985 में 33 वर्ष पूर्व प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा मेडिकल विंग की नींव रखी गई थी। तब से लेकर मेडिकल विंग समाज की सेवा में समर्पित है। इन 33 वर्षों में विंग द्वारा मेडिकल क्षेत्र में आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य को लेकर कई प्रयोग भी किए हैं जो सफल रहे हैं एवं इनसे कई लोगों की गंभीर बीमारियां ठीक हुई हैं। इसी के तहत एक कैड प्रोग्राम हार्ट रोगियों के लिए शुरू किया गया है। इसके तहत प्रशिक्षण लेकर अब तक करीब 8 हजार हृदय रोगी राजयोग मेडिटेशन, नियमित व्यायाम और संतुलित दिनचर्या को अपनाकर पूरी तरह स्वस्थ हो गए हैं। इसके अलावा विंग द्वारा नशामुक्ति, हेल्थफेयर जैसे कई प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं। मेडिकल विंग द्वारा चलाए गए विभिन्न अभियानों से प्रेरणा लेकर अब तक 12 लाख से अधिक लोग नशामुक्त हो चुके हैं जो संस्थान के लिए गौरव की बात है, तो आइए जानते हैं मेडिकल विंग की गतिविधियां....

36वीं माइंड-बॉडी नेशनल कॉन्फ्रेंस 7 सितंबर से

मेडिकल विंग के कार्यकारी सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने बताया कि अब तक 35 माइंड-बॉडी मेडिसीन नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की जा चुकी हैं। वहीं 36वीं नेशनल कॉन्फ्रेंस संस्थान के माउंट आबू स्थित एकेडमी फॉर ए बेटर वर्ल्ड (ज्ञान सरोवर परिसर) में 7 सितंबर से 9 सितंबर 2018 तक आयोजित की जाएगी। इसमें देशभर से मेडीकल क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ, हॉस्पिटल के डायरेक्टर, सर्जन, डॉक्टर्स और नर्सिंग स्टाफ भाग लेंगे। इस कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य यह बताया है कि यदि हमारा माइंड शांत और खुश है तो हमारा शरीर भी स्वस्थ और निरोगी रहेगा। क्योंकि हमारे मन में जो भी विचार चलते हैं उसका सीधा प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है। दुनिया में हुए तमाम शोध में यह बात साबित हो चुकी है कि 95 फीसदी बीमारियों का कारण हमारा मन ही है। आज हम अपने शरीर को तो पौष्टिक भोजन खिला रहे हैं लेकिन मन (माइंड) को जो भोजन है उसे नहीं करा रहे हैं। जो हमारे जीवन की दशा और दिशा तय करता है। इन कॉन्फ्रेंस में भाग लेकर अब तक हजारों मेडिकल क्षेत्र से जुड़े लोगों को फायदा पहुंचा है और उनका जीवन पूरी तरह से बदल चुका है। सबसे बड़ी बात इसमें ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन और इंटरनेशनल स्पीकर ब्रह्माकुमारी शिवानी भी इस बार कॉन्फ्रेंस में डॉक्टर्स को संबोधित करेंगी।

ब्रह्माकुमारीज़ और स्वास्थ्य विभाग ने उठाया तंबाकू मुक्त राजस्थान का बीड़ा, अभियान शुरू

एक सर्वे के मुताबिक अकेले राजस्थान में तंबाकू उत्पादों के सेवन के कारण हर साल करीब 72 हजार लोगों की मौत हो जाती है। जबकि भारत में करीब आठ लाख लोग प्रतिवर्ष अपनी जान गंवा देते हैं। प्रत्येक 10 मौत में से एक मौत तंबाकू के कारण हो रही है। इससे हमारी आयु 10 वर्ष तक कम हो जाती है। आज 35 फीसदी युवा नशे के चपेट में हैं। इस गंभीर समस्या को देखते हुए राजस्थान सरकार के स्वास्थ्य विभाग और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मेडिकल विंग ने संयुक्त रूप से तंबाकू मुक्त राजस्थान का बीड़ा उठाया है। इसके तहत ग्राम से लेकर जिला स्तर तक लोगों को व्यक्तिगत स्तर पर काउंसलिंग कर तंबाकू छोड़ने के लिए प्रेरित किया जाएगा। साथ ही भविष्य में उपयोग नहीं करने का संकल्प दिलाया जाएगा।

30 साल में की गई मेडिकल विंग की सेवाएं...

आयोजन	होलिस्टिक हेल्थफेयर	हेल्थ अवेयरनेस कैंपेन
कार्यक्रम/ कॉन्फ्रेंस	200	06
लाभ लेने वाले नागरिक	70 लाख	06 लाख
ग्रामीण स्वास्थ्य शिक्षा	10 लाख	70 हजार
नशा मुक्त लोग	12 लाख	1.5 लाख
स्कूल-कॉलेज में कार्यक्रम	04 हजार	750
जेल और झुग्गी झोपड़ी	200	75
महिला संगठनों का सहयोग	500	150
फैक्ट्री एवं इंडस्ट्री	350	200
अन्य संस्थानों में सेवा	1000	1725

33 साल पहले हुई थी मेडिकल विंग की स्थापना

70 लाख से अधिक लोगों को दिया नशामुक्ति का संदेश

10 लाख ग्रामीणों को दी स्वास्थ्य शिक्षा

200 से अधिक नेशनल मेडिकल कॉन्फ्रेंस और सेमीनार का आयोजन

06 लाख लोगों को स्वास्थ्य कैंप लगाकर किया प्रशिक्षित

मेडिकल विंग का नशामुक्ति अभियान

- माई इंडिया, हेल्दी इंडिया
- माई इंडिया, एडिक्शन फ्री इंडिया
- एक्रेडीटेड डीपीएपी सेंटर
- होलीस्टिक एप्रोच टू डायबिटीज
- थ्रीडी हार्टकेयर (कैड)
- डिवाइन मदर बेबी
- स्कूल हेल्थ (आकाश)
- हेल्थ प्रोमोटिंग गार्डन्स
- थ्रीडी हेल्थकेयर फॉर एड्स पैसेंट्स
- एनीटाइम मेडिटेशन (एटीएम)
- बीके हेल्थकेयर
- माई नेपाल, हेल्दी नेपाल

डॉ. बनारसीलाल साह
कार्यकारी सचिव, मेडिकल विंग

60 नेशनल मेडिकल कॉन्फ्रेंस का आयोजन

25 हजार डॉक्टर्स को मिला लाभ

07 नर्सिंग कॉन्फ्रेंस का आयोजन

20 हजार नर्स व मेडिकल स्टाफ को मिला लाभ

36 वीं माइंड-बॉडी मेडीसिन नेशनल कॉन्फ्रेंस 7 सितंबर 2018 से

मेडिकल क्षेत्र में सेवा गतिविधि...

- नेशनल कॉन्फ्रेंस, सेमीनार, स्ट्रीट, गेट-टू-गेदर फॉर मेडिकल प्रोफेशनल्स
- समय-समय पर स्वास्थ्य मेलों का आयोजन
- व्याख्यान, कार्यशाला, संगोष्ठी का आयोजन
- राजयोग मेडिटेशन कैंप
- पर्सनॉलिटी डवलपमेंट कैंप
- हेल्थ अवेयरनेस कैंपेन
- नशामुक्ति शिविर एवं परामर्श
- पॉजीटिव थिंकिंग कोर्स
- मेडिकल स्टॉफ ट्रेनिंग प्रोग्राम
- हेल्दी, हैप्पी लाइफ स्टाइल से कोरोनरी आर्टरी डिसीज (कैड) रिगरेशन कैंप
- एग्जीबिशन एंड टैगलॉउस

देशभर के जाने- माने डॉक्टर्स के अनुभव....

"**राजयोग** मेडिटेशन का यह ज्ञान सिर्फ हमारे तक सीमित न रख, इसका लाभ दोस्तों, पड़ोसी और मरीजों तक पहुंचना चाहिए, ताकि कोई बीमारी आने से पहले ही रोकी जा सके।

डॉ. बलराम आयरन, प्रमुख,
कॉर्डियोथोरासिक डिपार्टमेंट, एआईएमएस, नई दिल्ली

"**स्वस्थ** भारत के लिए हम सब एक साथ मिलकर सेवा करें। ब्रह्माकुमारी संस्था भारत के लोगों में शांति, प्रेम, सामंजस्य देने का कार्य कर रही है, ये खुशी की बात है।

डॉ. प्रतापन नायर
प्रिंसिपल, अमृता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, कोच्चि

"**आध्यात्मिकता** का ज्ञान मिलने के बाद जीवन को पूरी तरह से एक नई दिशा मिली है। इससे व्यवसाय में हर परिस्थिति को सुलझाने के लिए एक नया तरीका मिला है।

डॉ. राधा शर्मा
स्वास्थ्य मंत्री, ओमान सरकार

स्व प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

खुदा को अपना दोस्त बना लो तो कभी दिलशिकस्त नहीं होंगे

परमात्मा को बना लें खुदा दोस्त, कभी नहीं मिलेगा धोखा

आत्मा और परमात्मा में पहली समानता है स्वरूप की समानता। परमात्मा प्रकाशपुंज है, मैं आत्मा भी प्रकाशपुंज हूं। दोनों का एक जैसा स्वरूप है। दूसरी समानता है गुणों की समानता। आत्मा सतोगुणी स्वरूप है और परमात्मा सर्व गुणों का सागर है, तो गुणों की समानता। अर्थात् स्वभाव की समानता। दोनों की प्रकृति एक जैसी है। तीसरी समानता है धाम की समानता। मानो कोई विदेश में चला जाए और वहां कोई अपने गांव का व्यक्ति मिल जाए, तो वहां भी दोस्ती हो जाती है। परमात्मा भी परमधाम का निवासी है और हम आत्माएं भी परमधाम की निवासी हैं।

जब यह तीन समानताएं है फिर दोस्ती हो ही सकती है। दोस्त को कैसे याद करना होता है? मन में कोई भी बात हो तो हो सकता है मात -पिता से छुपा लें। लेकिन दोस्त को मन की हर बात सुना देते हैं। परमात्मा से भी दोस्ती का संबंध जोड़कर तो देखो कितना सुखद अनुभव होता है। जैसे हर बात में हमारे पास एक ऐसा सहारा है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं, जो कभी धोखा नहीं देंगे। इस दुनिया के दोस्त तो मतलबी होते हैं और समय आने पर दिखाई भी नहीं पड़ते। परन्तु भगवान निःस्वार्थ भाव से सदा साथ निभाते हैं। तो हमें भी मतलब से उससे दोस्ती नहीं जोड़नी है लेकिन वफादारी से दोस्ती का अनुभव करें। दोस्ती के संबंध पर एक कहानी याद आती है- एक बार एक बंदे की दोस्ती खुदा से हो गई। दोनों बहुत प्यार भरी बातें करते थे। एक दिन बंदे के मन में विचार आया और उसने खुदा से कहा खुदा, आप तो जन्नत के मालिक हो। कभी मुझे भी अपनी जन्नत के सुख का अनुभव कराओ। खुदा ने पूछा कि आखिर तुम्हारा भाव क्या है। बंदे ने कहा कि वह दस दिन के लिए जन्नत में रहकर जन्नत का सुख अनुभव करना चाहता है। खुदा ने कहा बस सिर्फ दस दिन के लिए। बंदे ने हामी भरी और खुदा जन्नत में ले गए और खुदा ने कहा लो आज से दस दिन के लिए मैं तुम्हें स्वर्ग का मालिक बनाता हूं और तुम जितना सुख, आनंद भोगना चाहो भोग लो। पहले दिन ही बंदे ने महसूस किया कि उसने दस दिन कहकर गलती कर दी है। परन्तु उसने देखा कि स्वर्ग में हर कार्य बहुत जल्दी हो जाता है। तो उसके मन में विचार आया कि क्यों न मैं अपने लिए एक ऐसा ही स्वर्ग तैयार करवा दूं। उसने सारे संसाधन लगाकर दस दिन में वैसा ही स्वर्ग तैयार करवा दिया और दस दिन बाद खुदा को उसकी जन्नत लौटा दी। जब खुदा ने देखा कि उसने अपने लिए ऐसा ही स्वर्ग तैयार करवा दिया तो उस बंदे पर हंसी आ गई कि इसने मुझे भी नहीं छोड़ा लेकिन गुस्सा नहीं आया। खुशी हुई कि चलो अब बराबर की दोस्ती तो हो गई। यह है खुदा के साथ संबंध निभाने की विधि, एकदम न्यारी और प्यारी।

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ➤ **ब्र.कु. कोमल,** ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ➤ 9413384884, 9179018078
Email ➤ shivamantran@bkivv.org
➤ bkkomal@gmail.com

सूचना

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक **शिव आमंत्रण समाचार पत्र** एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य ➤ 90 रुपए; **तीन वर्ष** ➤ 260
आजीवन ➤ 2200 रुपए

Postal Registration No.- RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2018, Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month

● प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित ● संपादकः ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● डिजाइन व ग्राफिक्सः अमर (नोएडा) ● RNI No.: RJHIN/2013/53539